मन्त्र-प्रयोग

चुने हुए मंत्र, उनकी जप विधि, सिद्धि विधान, मंत्र प्रयोग से लाभ व अन्य जानकारी

सिद्ध बाबा औढरनाथ तपस्वी

आर. बी. एस. प्रकाशन
हरिद्वार

मन्त्र प्रयोग

मंत्र : जपविधि : सिद्धिविधान

"मन्त्र; विज्ञान और मानव से परे स्थित शक्ति को जाग्रत करते हैं। मन्त्रसाधक जो भी चाहता है, वह उसे अवश्य प्राप्त होता है।

—प्राणतोषणी

चेतावनी

यहाँ हम पाठकों के लाभ के लिए कुछ चुने हुए मन्त्र और उनकी प्रयोग विधि प्रस्तुत कर रहे हैं। जो लोग दुरुपयोग करने के उद्देश्य से या केवल परीक्षा के लिए स्वार्थसिद्धि हेतु इन साधनों को सिद्ध करना चाहते हैं उन्हें कभी सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती। यदि हो भी जाये तो शीघ्र नष्ट हो जाती है जिससे साधक को भी हानि पहुँच सकती है। इस पुस्तक में दिये गये मन्त्रों की सिद्धि उन्हें ही प्राप्त होगी जिनका आचरण शुद्ध, हृदय पवित्र तथा द्वेषभाव आदि विकारों से रहित हो और जो केवल दूसरों की भलाई के लिए इनको सिद्ध करना चाहते हों।

—'बाबा'

ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः

मन्त्र प्रयोग

□

चुने हुए मन्त्र, उनकी जपविधि, सिद्धिविधान, मन्त्र प्रयोग से लाभ व अन्य जानकारी

□

(इस संस्करण में ब्लड प्रेशर, हृदय रोग; वायु विकार, पीलिया तीव्र ज्वर; कर्ण विकार दूर करने के मंत्र तथा बिक्री बढ़ाने और विद्यार्थियों के लिए सिद्ध मन्त्र का समावेश भी किया गया है।)

संग्रह और संपादन—सिद्ध बाबा औढरनाथ 'तपस्वी'

मूल्य— १२-०० रुपये

आर.बी.एस. प्रकाशन, हरिद्वार (उ०प्र०)

चेतावनी

यहाँ हम पाठकों के लाभ के लिए कुछ चुने हुए मन्त्र और उनकी प्रयोग विधि प्रस्तुत कर रहे हैं। जो लोग दुरुपयोग करने के उद्देश्य से या केवल परीक्षा के लिए स्वार्थसिद्धि हेतु इन साधनों को सिद्ध करना चाहते हैं उन्हें कभी सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती। यदि हो भी जाये तो शीघ्र नष्ट हो जाती है जिससे साधक को भी हानि पहुँच सकती है। इस पुस्तक में दिये गये मन्त्रों की सिद्धि उन्हें ही प्राप्त होगी जिनका आचरण शुद्ध, हृदय पवित्र तथा द्वेषभाव आदि विकारों से रहित हो और जो केवल दूसरों की भलाई के लिए इनको सिद्ध करना चाहते हों।

—'बाबा'

ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः

मन्त्र प्रयोग

□

चुने हुए मन्त्र, उनकी जपविधि, सिद्धिविधान, मन्त्र प्रयोग से लाभ व अन्य जानकारी

□

(इस संस्करण में ब्लड प्रेशर, हृदय रोग; वायु विकार, पीलिया तीव्र ज्वर; कर्ण विकार दूर करने के मंत्र तथा बिक्री बढ़ाने और विद्यार्थियों के लिए सिद्ध मन्त्र का समावेश भी किया गया है।)

संग्रह और संपादन—सिद्ध बाबा औढरनाथ 'तपस्वी'

मूल्य— १२-०० रुपये

आर.बी.एस.प्रकाशन, हरिद्वार (उ०प्र०)

प्रकाशक :
रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन)
हरिद्वार (२४९४०१)

मुख्य विक्रेता—
पुस्तक संसार, बड़ा बाजार, हरिद्वार
पुस्तक संसार, नुमाइश का मैदान, जम्मू

मुद्रक—
ओम प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली-६

मूल्य—
१२-००

प्रथम संस्करण, १९८२
द्वितीय संस्करण, १९८३
तृतीय संस्करण, १९८४
चतुर्थ संस्करण, १९८५
पंचम संस्करण, १९८७
षष्टम् संस्करण, १९८८

MANTRA PRAYOG Rs. 12.00
Published by-R. B. S. Prakashan Hardwar. (India)

मंत्र-तंत्र के सम्बन्ध में

- ☐ मनुष्य जो कुछ भी वोलता है उसकी ध्वनि और शब्दों का जब गुंफन हो जाता है तो उससे एक विशेष लय उत्पन्न होती है ये लय की सृष्टि ही मंत्र का रूप वनती है।
- ☐ मंत्र जप का अर्थ है—वार-वार आवृत्ति ! वार-वार आवृत्ति इसलिए करते हैं कि मनुष्य निहितशक्ति को व्यवहार रूप में प्रयोग के लिए पा सके।
- ☐ जैसे आयुर्वेद का ज्ञाता जानता है कि अमुक धातु को सौ वार पकाने का विधान है, अमुक भस्म बनाने के लिए उस क्रिया को वारम्वार दोहराना होता है ऐसे ही मंत्र साधना की प्रक्रिया है उसे सिद्धिप्रद बनाने के लिए एक जटिल और श्रम साध्य प्रक्रिया से गुजरना होता है और भिन्न-भिन्न मंत्रों के लिए अलग-अलग संख्याओं में जप का विधान है।
- ☐ औषधि विज्ञान में जैसे शोधने, तराशने, पकाने और अन्य रसायनिक क्रियायें संपादित की जाती हैं उसी प्रकार मंत्र को भी संशोधित किया जाता है, हवन आदि क्रियाओं से उसकी शक्ति को सिद्ध अवस्था में लाते हैं।
- ☐ मंत्रसिद्धि का अर्थ है—मंत्र को सशक्त और जाग्रत बनाना। प्राण-तोषणी के अनुसार 'मंत्र साधक जो भी चाहता है वह उसे अवश्य प्राप्त होता है।'
- ☐ मंत्र शास्त्र के अनुसार सृष्टि के प्रारम्भ में शिव और शक्ति ने नृत्य किया जिससे कई प्रकार की ध्वनियाँ उत्पन्न हुईं ; वही ध्वनियाँ मंत्रों का मूल आधार हैं।
- ☐ शब्दों में अन्तर्निहित परमाणविक ऊर्जा को प्रकट करने के लिए जो साधना हमारे पूर्वजों ने करी मंत्रशास्त्र उसी साधना का परिणाम है।
- ☐ शब्द की विराट्शक्ति को प्रकट करने के लिए हमें शब्द के मूल स्वरूप को जानना पड़ता है। मंत्र विज्ञान हमें बताता है कि कण्ठ से निकलने से पूर्व शब्द को किन अवस्थाओं से होकर प्रस्फुटित होना पड़ता है। वोलने से पहले आत्मा में क्रिया होती है और शब्द बुद्धि तथा मन से मंत्रणा करता है। उन्हीं शब्दों द्वारा मंत्रों की संरचना होती है।

☐ मंत्रों को तेजोमय शक्ति का समुच्चय कहा गया है, इसके वीजाक्षर शक्तिपुंज माने जाते हैं।

☐ मंत्र उच्चारित शब्द वीज हैं जो ध्यान की मानसिक शक्ति से वोये जाते हैं।

☐ मंत्रों का मूल आधार उनकी ध्वनि है क्योंकि मंत्र मूलरूप में ध्वन्यात्मक हैं। मंत्रों के जाप से जो प्रभाव होता है वह शब्दों का न होकर उसकी ध्वनि का होता है।

☐ प्राचीन भारतीय मनीषियों के अनुसार हमारे जीवन की पूर्णता में मंत्रों का वहुत महत्त्व है जीवन में जो भी अभाव हैं वे मंत्र साधना से पूरे किये जा सकते हैं।

☐ मंत्र-तंत्र सर्वत्र व्याप्त है; आदमी के जीवन से लेकर ललित कलाओं तक। यहाँ तक कि लेखक की कलम, चित्रकार की रेखायें और व्यक्ति के सोचने का ढंग भी इस कला से प्रभावित हो सकते हैं।

☐ एक पाश्चात्य प्रसिद्ध मनोचिकित्सक डा० हेमर्शलेग का कहना है कि साधकों से उन्होंने वहुत कुछ सीखा है। उनकी मंत्र मान्यता और आधुनिक मनोचिकित्सा में अद्भुत समानता है।

☐ वैज्ञानिक एक तरफ तो कहते हैं कि साधक और तांत्रिक रात का सहारा इसलिए लेते हैं कि उन्हें अपनी सत्यता पर परदा डालना होता है; दूसरी तरफ विज्ञान भी मंत्र तंत्र का सहारा ले रहा है। पश्चिमी देशों में मनोरोगों को दूर करने के लिए टोनों-टोटकों और मंत्रों की उपयोगिता को अब स्वीकार किया जा रहा है।

☐ विज्ञान अन्तिम सत्य नहीं है; दैविक और आध्यात्मिक शक्तियों के साथ-साथ कुछ प्रेतशक्तियाँ भी अनंत आकाश में विचरण करती हैं। आप स्वयं समझ सकते हैं कि पूरे यत्न के वाद भी एक काम नहीं होता और फिर अचानक विना किसी प्रयत्न विशेष के वड़े-से-वड़ा काम वन जाता है।

☐ कतिपय लोगों ने मंत्र-तंत्र को व्यवसाय वना लिया है और वे सिद्धि का दुरुपयोग करने लगे हैं। सिद्धियों को प्राप्त कर उनका सदुपयोग समाज के हित में है जो साधक ऐसा करते हैं वे कल्याणकारी हैं लेकिन जब सिद्धि का प्रयोग अनावश्यक वशीकरण और मारण जैसे स्वार्थी प्रयोगों में करते हैं तो ये आपत्तिजनक और हानिकारक है।

—प्रकाशक

बाबा की ओर से

परमात्मा को बार-बार नमस्कार है, जिसकी कृपा से हम सब मनुष्य अपने-अपने कार्य को निर्विघ्नता से सम्पन्न करते हैं। पिछले वर्ष की बात है रुद्राक्ष के सम्बन्ध में जो कुछ प्राचीन ग्रन्थों में कहा गया उसको क्रम से लिखकर मैंने रखा और थोडी-बहुत जानकारी जो मुझे थी वह भी मैंने उसमें लिखी जो मेरे भक्त रणधीरसिंह ने उसे एक उत्तम पुस्तक बनाकर छाप दिया। मुझे प्रसन्नता हुई कि पाठकों को वह बहुत जंची और अब वह दुबारा भी छप चुकी है। वास्तव में इस कलिकाल में भी जो भक्त श्रद्धा और विश्वास से करे वह निश्चय ही फलप्रद होता है ; इसमें किसी तरह का संशय नहीं। विशेषत: इस युग में जिन विशिष्ट देवताओं के मंत्र शीघ्र और निश्चित सिद्ध होते हैं उन पर प्रकाश डालने के लिए बहुत दिनों से मेरे मित्र और भक्त आग्रह कर रहे थे।

मैं स्वयं भी मंत्र विद्या को एक समुदाय भर के लिए सुरक्षित रखना अपराध समझता हूँ, इसे साधकों तक ही सीमित रखने से, गलत साधकों की वजह से लोग मंत्र को पाखंड समझते हैं। सर्वशक्तिमान भगवान शिव ने मंत्र-शास्त्र की रचना की और इसी मंत्र शास्त्र के प्रभाव से देवताओं ने असुरों पर विजय पाई। मंत्र द्वारा ही आद्य श्री शंकराचार्य ने दूसरे शरीर में प्रवेश करने की शक्ति प्राप्त की थी। फिर रावण आदि बड़े-बड़े असुरों ने भी मंत्रों के बल से ही देवताओं से अद्भुत वरदान प्राप्त किये थे। इसी तरह आज भी अनेकों साधक अपने-अपने इष्ट देवों के मंत्रों से अभीष्ट सिद्धि प्राप्त करते हैं। अत मंत्रों को ढोंग व पाखण्ड से निकालकर सर्व-सुलभ करने की भावना को इस पुस्तक द्वारा हम एक अंश रूप में प्रयत्न कर रहे हैं। मंत्र विद्या पूर्णश्रद्धा-विश्वास का विषय है, गूढ़ है, लेखनी से उसका प्रकाशन संभव नहीं फिर भी अपने गुरुओं के आशीर्वाद से दैनिक जीवन में उपयोगी कुछ अनुभूत मंत्रों का उल्लेख मैंने किया है।

जिसकी जो राशि हो उसके मंत्र की उपासना करके वह हर कार्य में सफलता प्राप्त कर सकता है। साथ ही नवग्रह उपासना और उसके मंत्रों को भी विधान सहित दिया है। कलयुग में जिन देवताओं और महाविद्याओं के मंत्र सिद्धिप्रद बताये गये हैं उनका भी विवरण दिया है। गृहस्थ जीवन में उपयोगी और विभिन्न रोग नाशक मंत्रों का भी मैंने जिक्र कर दिया है। विधिपूर्वक उपासना करके जपने पर मंत्र अवश्य फल देते हैं। मंत्र सिद्धि करने के लिए शुभ मुहूर्त, काल, स्थानादि विचारकर कार्य आरम्भ करना चाहिए।

"कर भला, हो भला, अंत भले का भला"

विशेष :—मुझे पाठक कोई सिद्ध बाबा या तांत्रिक समझकर पत्र-व्यवहार न करें। मैंने तो अपनी मंदबुद्धि से केवल इन मंत्रों का संग्रह करके उनको विधि सहित एक माला में पिरो दिया है। साक्षात्कार की इच्छा वाले महानुभव क्षमा करेंगे।

क्षमा प्रार्थी—

—**बाबा औढरनाथ**

कुछ नियम—

१. तान्त्रिक के लिए कठोर साधना आवश्यक है।
२. आसानी से ताँत्रिक नहीं बना जा सकता।
३. पूरी साधना के लिए तैंतीस वर्ष जरूरी हैं।
४ ताँत्रिक को स्वार्थी नहीं होना चाहिए।
५. एक ज्योति जलाई जाती है और फिर साधना के लिए बैठा जाता है

अनुक्रमणिका

नवग्रहों के मन्त्र—

श्री गणपति के मन्त्र—

गणपति के ताँत्रिक मन्त्र—

मन्त्र दीक्षा

दैविक मंत्र शास्त्र में प्रत्येक मंत्र की गुरु से दीक्षा लेकर ही उसका जप करने का विधान है। बिना दीक्षा का मन्त्र सफल होता नहीं देखा गया है। दीक्षा का विषय भी बड़ा गहन है जिस कारण बहुत धैर्य-शील व्यक्ति ही उसे समझकर दीक्षा ले पाता है। द्रुतगामी इस युग में अत्यधिक धैर्य से दीक्षा ले पाने वाले मनुष्य कम हैं इसी कारण मंत्र शास्त्र का प्रभाव भी कम होता जा रहा है। कोई भी दैविक मन्त्र का जाप यदि विधिपूर्वक किया जाये तो अवश्यमेव सिद्धि मिलती है। दीक्षा में भी और जप में भी विश्वास का बड़ा महत्व है। दृढ़ विश्वास से किया गया मंत्र जाप असफल नहीं होता।

यदि उचित गुरु से मन्त्र दीक्षा संभव न हो सके तो कोई भी मन्त्र जप करने से पूर्व एक कागज पर मन्त्र को शुद्ध लिखकर अपने इष्ट देव को समर्पण कर दिया जाये और फिर उन्हें प्रणाम कर उस कागज को लेकर श्रद्धापूर्वक ११ बार इस तरह से पाठ करें कि जैसे साक्षात् सामने बैठे हुए गुरु को सुना रहे हैं।

इस तरह से ११ बार पढ़कर प्रणाम करने से यह मंत्र दीक्षा पूर्ण हो जाती है। तदनन्तर ही जप आरम्भ करना चाहिए।

मन्त्र में ध्यान

किसी भी मन्त्र का जप करने से पूर्व उस मन्त्र के देवता का ध्यान करना चाहिए। इस पुस्तक में देवताओं के कुछ मन्त्रों के साथ ध्यान के श्लोक दिये गए हैं उन्हीं श्लोकों से उनका ध्यान करना चाहिए। जिन मन्त्रों के साथ ध्यान के श्लोक नहीं दिये गए हैं वहाँ उस देवता का मानसिक ध्यान करना चाहिए। फिर उस देव-विग्रह का या उसके प्रतीक रूप में पूंगी फल रखकर उसका मूल मन्त्र से पचोपचार या षोडषोपचार पूजन करना चाहिए। इसके बाद ही किसी मन्त्र का जप प्रारम्भ किया जाना चाहिए।

मन्त्र में काल विचार

काल—कार्तिक, आश्विन, बैशाख, माघ, मार्गशीर्ष फाल्गुन और श्रावण ये मास मन्त्र जप के लिए उत्तम कहे गए हैं।

तिथि—तिथियों में पूर्णिमा, पंचमी, द्वितीया सप्तमी, दशमी और त्रयोदशी शुभ हैं। शि

मन्त्रों में त्रयोदशी सबसे उत्तम है। लक्ष्मी मंत्रों के लिए द्वितीया, शक्ति मन्त्रों के लिए तृतीया, गणपति मन्त्रों के लिए चतुर्थी, सूर्य मन्त्रों को सप्तमी, सरस्वती मन्त्रों को त्रयोदशी और पूर्णिमा को प्रारम्भ किया गया सभी देवों के मन्त्रों का पूर्णलाभ मिलता है।

पक्ष—शुक्ल पक्ष में शुभ चन्द्र और शुभवार देखकर तिथि निर्णय करना चाहिए।

वार—रविवार, शुक्रवार, बुधवार और वृहस्पतिवार अधिक फलदाई होते हैं।

नक्षत्र—पुनर्वसु, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण, रेवती, अनुराधा और रोहिणी नक्षत्र मंत्र शास्त्र में लिए गए हैं।

मन्त्र में स्थान विचार

गंगा आदि नदियों के तट पर, पर्वत की गुफाओं में, वन में, समुद्र के किनारे, तीर्थ क्षेत्र और किसी भी पुण्य भूमि पर मन्त्र जप का विधान है। अपने घर पर भी श्रद्धा से रात्रि में जप करें। शमशान भूमि में भय और चिंता त्याग कर जप कार्य करने से मन्त्र सिद्ध होता है। उत्तराभिमुख होकर जप करना उत्तम है।

मन्त्र में आसन और माला

आसन—कुशासन, बाघम्बर, मृगचर्म और ऊन से निर्मित आसन प्रशस्त हैं।

माला—रुद्राक्ष, जयन्तीफल, तुलसी, स्फटिक, हाथी-दांत, मूंगा और लाल चन्दन तथा कमल की माला कोई भी हो १०८ दाने की होनी चाहिए। रुद्राक्ष की माला सर्वकर्म सिद्धिप्रद है। शिव मन्त्रों में रुद्राक्ष की माला का प्रयोग सर्वश्रेष्ठ है। रुद्राक्ष धारण करके मंत्र जप करने से सिद्धि प्राप्त होती है। ।* मुक्तिप्रद मंत्र प्रयोग में २७ और अभिचार मन्त्रों में १५ दाने की माला प्रयोग की जाती है।

मन्त्र जप का विधान

स्नान और सन्ध्यादि नित्यकर्म से निवृत होकर आसन पर बैठें और नैऋत्य दिशा की ओर "ॐ वास्तु पुरुषाय नमः, ॐ ब्रह्मणे नमः, अस्त्राय फट्" इन मंत्रों से जल, गंधाक्षत और पुष्प से पूजन करे। फिर अक्षत

---

*रुद्राक्ष महात्म्य और धारणविधि मूल्य ६-००

या सरसों हाथ में लेकर अपने चारों ओर निम्न-लिखित मंत्र को पढ़ते हुए डाल दें—

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥
रक्त चन्दन सिद्धार्था भस्मदूर्वांकुशाक्षताः।
विकराकृतिसंदिष्टाः सर्वविघ्नौघनाशकाः ॥

फिर निम्नलिखित मन्त्र से आसन शुद्धि करें—

अस्य श्री आसन मंत्रस्य मेरुपृष्ठः ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मोदेवता, आसनपरिग्रहे विनियोगः।

फिर निम्नलिखित मन्त्र से आसन का पूजन करें—

"ह्लीं आधारशक्ति कमलासनाय नमः"

तदनन्तर निम्न श्लोक पढ़ें—

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका
देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां नित्यं पवित्रं कुरू चासनम् ॥

इसके बाद सर्वत्र पंचगव्य छिड़ककर सर्वत्र शोधन करें। पंचगव्य में गोमूत्र, गोदुग्ध, गोघृत, गोदधि, गोबर लेना चाहिए। इसके बाद अभीष्ट मन्त्र का जप करें।

×

द्वादश राशियों के मन्त्र

अपनी-अपनी जन्म राशि के अनुसार मन्त्र का जाप करने से (नित्यप्रति १ माला अर्थात् १०८ बार का जाप) आरोग्य प्राप्त होता है। चित्त प्रसन्न रहता है। जिनकी जन्म राशि अज्ञात हो उनकी नाम राशि पर उस राशि का मन्त्र जाप करने से शांति मिलती है। समाज में प्रतिष्ठा और प्रभाव बनाये रखने के लिए नित्य प्रातःकाल मन्त्र जप करने के बाद ही दूसरा कार्य करना चाहिए।

१. मेष राशि का मन्त्र—

"ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नमः"

×

२. वृषभ राशि का मन्त्र—

"ॐ गोपालाय उत्तर ध्वजाय नमः"

×

३. मिथुन राशि का मन्त्र—

"ॐ क्लीं कृष्णाय नमः"

×

४. कर्क राशि का मन्त्र—

"ॐ हिरण्यगर्भाय अव्यक्त रूपिणे नमः"

×

५. सिंह राशि का मन्त्र—

"ॐ क्लीं ब्रह्मणे जगदाधाराय नमः"

×

६. कन्या राशि का मन्त्र—

"ॐ नमो प्रीं पीताम्बराय नमः"

×

७. तुला राशि का मन्त्र—

"ॐ तत्वनिरंजनाय तारकरामाय नमः"

×

८. वृश्चिक राशि का मन्त्र—

"ॐ नारायणाय सुरसिंहाय नमः"

×

६. धनु राशि का मन्त्र—

"ॐ श्रीं देवकृष्णाय ऊर्ध्वंषंताय नमः"

×

१०. मकर राशि का मन्त्र—

"ॐ श्रीं वत्सलाय नमः"

×

११. कुम्भ राशि का मन्त्र—

"ॐ श्रीं उपेन्द्राय अच्युताय नमः"

×

१२. मीन राशि का मन्त्र—

"ॐ क्लीं उद्धृताय उद्धारिणे नमः"

×

रोग नाशक मन्त्र

१. विषहर गरुड़ मन्त्र—आप यदि इस मंत्र को नवरात्रों में जपकर सिद्ध कर लें तो सांप, विच्छू या किसी तरह का विष उतारने में इसे प्रयोग कर सकते हैं। १००० बार जप करने से ये मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

"ॐ क्षिप ॐ कृशानुभार्या स्वाहा।
ॐ गरुड़ प्रभंजय प्रभंजय
प्रभेदय प्रभेदय
वित्रासय वित्रासय
विमर्दय त्रिमर्दय स्वाहा हुँ
उग्ररूपधर सर्वविपहर
भीषय भीषय
सर्वं दह दह
भस्मी कुरू कुरु स्वाहा।"

×

२. खूनी बादी बवासीर दूर करने का मन्त्र—इस मंत्र को २१ बार पढ़कर लाल सूत में गाँठ लगायें। फिर २१ बार पढ़ें और गांठ लगादें। पुनः

२१ बार पढ़कर फिर गांठ लगायें। इस प्रकार से तीन गांठ लगाकर दाहिने पैर के अंगूठे में बांधने से रोग दूर हो जाता है।

"ॐ उमती उमती चल चल स्वाहा"

×

३. खूनी बवासीर का मन्त्र—प्रातःकाल की शौच के बाद सात बार पानी से गुदा को ये मंत्र पढ़-कर धोयें तो निरन्तर करते रहने से खूनी बवासीर दूर हो जाती है। आराम हो जाने पर मन्त्र पढ़ना बन्द करने पर भी दुबारा न होगी।

"तस्य तस्य देवाणां भूत पिशाच पिचास
काम मलमूत्र मनुष्याणांमभो दुषे न दीयते।"

×

४. अर्शनाशक मन्त्र—इस मन्त्र को नवरात्रि में प्रत्येक रात को १०८ बार जप करके सिद्ध करें। बाद में प्रतिदिन सायंकाल इस मंत्र को पढ़कर शौच क्रिया करें। अर्श (बवासीर) दूर हो जायेगी।

"उटिष्टंग टुष्टंग टुष्सुरा
सर्वेयक्ष, राक्षस, किन्नरा
पिशाच गुह्यका चैव मलमूत्र
मनुष्याणां ममोदुषेन दीयते।"

५. स्वास्थ्य लाभ के मन्त्र—यदि आप काफी समय से रुग्ण हैं और चारपाई पर घर में ही बैठे हुए या लेटे हुए जाप कर सकते हैं तो जप से पूर्व कमरे में श्री दुर्गा जी का चित्र लगवा लें। अगरबत्ती जलाकर निम्नलिखित मन्त्र का जाप किया करें—

"रोगानशेषानपहंसि—तुष्टा।
रूष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्॥
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां।
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति॥"

×

यदि आप सामान्य से किसी भी रोग से ग्रसित हैं तो नित्य प्रति स्नान करके इस निम्न लिखित मन्त्र का १०८ बार कम से कम जप किया करें। इसे नियमित रूप से करने पर किसी रोग का भय नहीं रहता—

"देहि सौभाग्यमारोग्यं,
देहि मे परमं सुखं।
रूपं देहि, जयं देहि,
यशो देहि, द्विषो जहि॥"

×

यदि कोई रोगी गम्भीर रूप से बीमार हो, स्वयं जप की स्थिति में न हो तो रोगी के किसी भी निकट सम्बन्धी से निम्नलिखित मंत्र का जाप रोग के निदान हेतु किया जा सकता है—

"करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी ।
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ।"

×

६. मृत्युभय नाशक मन्त्र—इस मन्त्र में महामृत्युंजय के बीज हैं रोगी स्वयं इसका पाठ कर सकता है।

"ॐ जूँ सः मां जीवैं पालय सः जूँ ॐ"

×

७. तीव्र ज्वर नाशक मन्त्र—यदि ज्वर तेज हो तो एक पानी से भरी कटोरी सामने रखकर मन्त्र को १०८ बार या २१ बार पढ़कर रोगी को पिला दें, लाभ होगा।

"ॐ मुं मुकटेश्वरीभ्याम् नमः"

×

८. कर्ण विकार दूर करने का मन्त्र—'अधिकस्य अधिकम् फलम्' यह उक्ति ध्यान में रखकर जितना अधिक से अधिक पाठ करें, समयानुसार और आस्था-पूर्वक लाभ प्राप्त होगा।

"ॐ व्दां द्वारवासिनीभ्याम् नमः"

×

९. ब्लडप्रेशर दूर करने का मन्त्र—विधि एवं संख्या पूर्वानुसार ही।

"ॐ वम् वज्रहस्ताभ्याम् नमः"

×

१०. हृदय रोग निवारक मन्त्र—जितना अधिक जप करेंगे उतना फल मिलेगा। आस्थापूर्वक आरम्भ करें।

"ॐ लं ललितादेविभ्याम् नमः"

×

११. वायुविकार दूर करने का मन्त्र—मन्त्र एवं विधि ब्लडप्रेशर वाले मंत्र की ही है। एक ही मन्त्र प्रयुक्त होता है।

×

१२. पीलिया झाड़ने का मन्त्र—विधि—एक कांसे की कटोरी में तिल का तेल लेकर रोगी के सिर पर रखें और कुशा के तिनके से उस तेल को चलाते हुए इस निम्न मन्त्र को सात बार पढ़ें। ऐसा तीन दिन तक करते रहने से तेल पीला पड़ जायेगा और रोगी का पीलिया दूर हो जायेगा।

"ॐ नमो वीर वेताल इसराल नार कहे तु देव खादी तू वादी, पीलिया कूँ मिटाती कारैं, झारैं पीलिया रहै न एक निशान, जो कहीं रह जाये तो हनुमंत की आन, मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।"

×

जीवन सुख के मन्त्र

१. गृहकलह नाशक मन्त्र—

आमतौर पर परिवारों में मामूली-मामूली बातों को तूल देकर गृहकलह होती है। परिवार में सब प्रकार की सुविधाओं के होते हुए भी अशान्ति बनी रहती है। कभी बाप बेटे की खटपट है तो कभी सास और बहू की। कभी मां-बेटी झगड़ा कर लेती हैं तो कभी भाई एक-दूसरे का सिर फोड़ने लगते हैं। ऐसी परिस्थितियों में कोई एक पक्ष यदि इस निम्नलिखित मन्त्र का जाप करे तो वातावरण में शांति बनी रह सकती है। घर के बड़े-बूढ़े इस मन्त्र को जपें तो गृह-कलह से मुक्ति मिल जाती है।

विधि—मन्त्र जाप करने का इच्छुक व्यक्ति स्नान करके काली की मूर्ति अथवा चित्र पर पुष्पांजलि अर्पण करके, देवी का मानसिक ध्यान करे। फिर इस नीचे दिये गए मन्त्र का, माला हाथ में लेकर १०८ बार जप करे। कम से कम २१ दिन में और अधिक से अधिक १०८ दिनों में गृह कलह से मुक्ति मिल जाती है।

"धां धीं धूं धूर्जटेः,
पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवी,
शां शीं शूं मे शुभं कुरू।"

×

२. विवाह और सन्तान का मन्त्र—

उत्तम संतान की प्राप्ति होने पर भी अविभावक लड़की या लड़के के विवाह में अनावश्यक अड़चनें आने से उद्विग्न हो जाया करते हैं। कहा भी जाता है कि संयोग न बनने से अथवा संयोग न होने पर बात नहीं बनती है। संयोग शीघ्र मिलाने के लिए और विवाह हेतु, मां-बाप कोई भी इस मन्त्र को जपे।

विधि—नित्य प्रति स्नान करके ४५ दिन तक एक माला जाप प्रतिदिन करे। इसके बाद इस मंत्र का प्रभाव स्पष्ट होने लगता है और ६० दिन तक कार्य पूरा होता है। जिन दम्पतियों के संतान उत्पन्न करने की क्षमता होने पर संतान नहीं है वह भी पति या पत्नी अथवा दोनों इसी विधि से जप करें। उक्त अवधि के भीतर फल प्राप्ति होती है।

"स देवि नित्यं परितप्यमान,
त्वामेव सीतेत्यभिभाषमाणः ।
दृढ़व्रतो राजसुतो महात्मा,
तवैव लाभाय कृत प्रयत्नः ॥"

×

३. भय नाशक मन्त्र—

रात को बुरे-बुरे स्वप्न आते हैं और डर लगने लगता है। कई व्यक्ति निर्जन में जाने से घबराते हैं। कोई भी छोटी-मोटी पारिवारिक समस्या आने पर आत्म-विश्वास खो बैठते हैं। ऐसे व्यक्तियों के लिए ये मन्त्र बहुत लाभदायक है; आत्मबल बनता है और बेकार के भय दूर होते हैं।

विधि—किसी एकान्त जगह पर या किसी कमरे में सामने हनुमान जी का बलशाली चित्र लगायें। चित्र के समक्ष नित्यप्रति किसी भी समय मन एकाग्र करके हनुमान जी की स्मृति कर १०८ बार नित्य जप करें।

"ॐ ऐं ह्रीं हनुमते रामदूताय नमः"

×

४. संकट नाशन मन्त्र—

किसी भी प्रकार के व्यापारिक, राजनैतिक, आर्थिक या सरकारी व्यवधान पड़ने पर, किसी से झगड़ा-फसाद होने पर, नौकरी न मिलने पर, नौकरी की तरक्की में रुकावट होने पर, मुकदमा वगैरा में कैसे ही संकट के समय मन्त्र का जाप सफलता प्रदान करेगा। वैसे ये मन्त्र उन्हीं को जपना चाहिए जो अनावश्यक रूप से संकट में घेर लिये गए हैं और अकारण ही फंस जाने से दुविधा में हैं। झूठे और गलत व्यक्ति के जाप करने पर तो कोई भी मन्त्र प्रभाव नहीं देगा।

विधि—यह मन्त्र बगुलामुखी देवी का है अतः बगुलामुखी का चित्र सामने रखकर उस पर पीले फूल चढ़ायें अगरबत्ती जलाकर जप करें।

"ॐ ह्लीं बगलामुखी
सर्वं दुष्टानाम् वाचं मुखं
पदं स्तम्भय,
जिह्वाम् कीलय कीलय
बुद्धिम् नाशय
ह्लीं ॐ ॥"

×

५. कार्य सिद्धि मन्त्र—

यह एक प्रभावशाली मन्त्र है। इस मन्त्र में अमुक के स्थान पर अपने कार्य उद्देश्य का उच्चारण करके मन्त्र पूर्ण करना चाहिए। विधि—प्रतिदिन एक माला (एक सौ आठ मनके की) इक्कीस दिन तक प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में या रात्रि को दस और बारह बजे के बीच में इसका जप करना विशेष लाभप्रद रहेगा।

"ॐ नमो महाशावरी शक्ति मम
अरिष्ट निवाराय निवाराय।
मम् (अमुक) कार्य सिद्ध कुरू कुरू स्वाहा॥"

×

६. उच्च पद पाने का मन्त्र—

यदि आपमें ऊँचे पद पर कार्य करने की बौद्धिक क्षमता है लेकिन किसी वजह से उत्तम पद पर नियुक्ति नहीं हो सकी है तो उच्च पद प्राप्ति और प्रतिष्ठा प्राप्ति के लिए इस मंत्र का जप किया जाना चाहिए।

विधि—श्री हनुमान जी की माता अंजनि देवी का चित्र अथवा मूर्ति स्थापित करें। अंजनि देवी का प्रतीक न मिलने पर काली अथवा देवी के किसी भी

स्वरूप की आराधना कर सकते हैं। कुशा के आसन पर या ऊनी कम्बल पर पश्चिम की ओर मुख करके बैठें। जप से पूर्व देवी का प्रारम्भिक पूजन करलें और दीपक तथा धूप आदि जलाये रखें। मन्त्र का जप ११ दिन या अधिक २१ दिन तक करें कितनी भी संख्या में मन लगाकर जपें लेकिन जप प्रतिदिन करें।

"ॐ नमो भगवती त्रिलोचनं त्रिपुरं देवि।
अंजलीम् मे कल्याणं कुरू कुरू स्वाहा॥"

×

७. आर्थिक संकट नाशन मन्त्र—

आजकल अधिकांश परिवारों में किसी भी आकस्मिक व्यय से घर खर्च का बजट गड़बड़ा जाता है। वैसे भी कई लोग प्राकृतिक प्रकोप या किसी भी कारण से आर्थिक समस्याओं में फंसे रहते हैं। इस मन्त्र के प्रभाव से आर्थिक संकट दूर करने में सहायता मिलेगी।

विधि—धन और ऐश्वर्य की देवी लक्ष्मी हैं उन्हीं का चित्र और मूर्ति इस मन्त्र के जप में प्रयोग की जायेगी। बुधवार की रात्रि जप में सर्वोत्तम रहती है, से प्रतिदिन जप किया जा सकता है। कोई भी

लाल फूल लक्ष्मी जी को अर्पण करके पूजन करें। विश्वास के साथ ५४ बार या १०८ बार प्रतिदिन ये मन्त्र पढ़ें।

"ॐ श्रीं श्रीं श्रीं कमले कमलाये
प्रसीद प्रसीद श्रीं
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।"

×

८. आकस्मिक समस्या का मन्त्र—

किसी भी आकस्मिक दुर्घटना होने पर (यात्रा में घर में या बाहर) ऐसी परिस्थिति में ये मंत्र मनोबल प्रदान करेगा। जिस स्थिति में भी हो मन्त्र का जाप तुरन्त शुरू कर दें।

"ओम् नमो भगवते वासुदेवाय"

अथवा

"श्री कृष्ण शरणं गच्छामि"

×

९. मनोरथ पूर्ति मन्त्र—

प्रतिदिन किसी समय निष्ठा से एक माला से अधिक का जाप करें।

"ॐ नमो नारायणाय"

×

१०. परीक्षा में सफलता का मन्त्र—

विद्यार्थी किसी भी परीक्षा से पूर्व (कुछ माह पूर्व आरम्भ करें) और इंटरव्यू देने से पहिले ये मन्त्र जपकर घर से निकलें। केवल ११ बार प्रातःकाल उठकर जपें। काफी समय तक जपने वाले को ये मंत्र सिद्ध हो जाता है तो वह परीक्षा में किसी प्रश्न का उत्तर न आने पर मंत्र को पांच बार जपे तो उसे उत्तर प्राप्त हो जायेगा।

"मोरि सुधारहि सो सब भांती।
जासु कृपा नहिं कृपा अघाती॥"

×

११. अधिकारी को अनुकूल करने का मन्त्र—

"ॐ क्लीं ज्ञानि नामयि चेतांसि
देवि भगवति हि सा।
वलादकृष्य मोहाय महामाया
प्रयच्छति क्लीं ॐ॥"

×

१२. राजकार्य सिद्धि मंत्र—

"ॐ श्रीं श्रीं ॐ ॐ ।
श्रीं श्रीं हुँ फट स्वाहाः ॥"

×

१३. विघ्न नाशक मन्त्र—

"सर्वबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वर ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरि विनाशनम् ॥"

×

१४. बिक्री बढ़ाने का मन्त्र—

यह एक सुप्रसिद्ध मन्त्र है। रविवार के दिन प्रातः हाथ में काले उड़द के २१ दाने लेकर २१ बार मन्त्र पढ़कर उड़द के दाने दुकान में बिखेर दे। यह प्रयोग एक बार करना ही यथेष्ट है।

"ॐ भंवर वीर तू चेला मेरा
खोल दुकान बिकरा कर मेरा।
उठे जो डंडी बिके जो माल
भंवर वीर सों करे निहाल ॥"

×

प्रभाव शाली सिद्ध मन्त्र

१. चिन्ताहरण सिद्ध मन्त्र—

विधि व लाभ—सर्वप्रथम तो इस मन्त्र की पूर्ण सिद्धि के लिए अपने-अपने वर्णाश्रम धर्मों का पालन आवश्यक है। ऐसा व्यक्ति यदि इस मंत्र को तन्त्रोक्त प्रकार से (विधि सहित) इक्कीस हजार बार नवरात्रों में जपकर सिद्ध कर ले तो फिर प्रतिदिन १०८ जाप करते रहने पर मनुष्य के सभी मनोरथ पूरे हो जाते हैं। इस मन्त्र को सर्वकार्य सिद्धिचिन्तामणि कहा गया है—

"ॐ ह्रीं श्रीं भगवति चिन्तामणि
सर्वार्थसिद्धि देहि देहि स्वाहा।"

×

. सिद्ध अघोरास्त्र मन्त्र—

विधि व लाभ—सिद्ध पुरुष इस मंत्र को बालक की नजर झाड़ने के काम में लाते हैं। इससे बालक की नजर झाड़ने पर वह तुरन्त दूर होती है। सर्व प्रकार शरीर की रक्षा होती है। प्रातः मध्याह्न और सायं थोड़ा-थोड़ा समय निकाल कर इस मन्त्र का पाठ करने से सिद्धि होती है। लगभग २१ हजार बार के

जप से मन्त्र सिद्ध हो जाया करता है।

अथ अघोरास्त्र मन्त्र

"ॐ नमो भगवते पशुपतये

ॐ नमो भूतादि पतये

ॐ नमो रुद्राय

खड्गरावण लं ल

विहर विहर सर सर

नृत्य नृत्य व्यसनं

भस्मार्चितशरीराय घंटाकपाल मालाधराय

व्याघ्रचर्मं परिधानाय शंशांककृत शेखराय

कृष्णसर्पं यज्ञोपवीतिने चल चल

वल वल अतिर्वीतक पालिने

हन हन भूतान्नाशय नाशय

मंडलाय फट् फट्

रुद्रांकुशेन शमय शमय

प्रवेशय प्रवेशय आवेणय

रक्षासि धराधिपतिः रुद्रो ज्ञापयति स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः
हौं ॐ जूसं त्र्यम्बकं
यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारूकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्
ॐ जूसः हौं भूर्भुवः स्वरोम्
ॐ नमो भगवते त्र्यम्बकाय
शूलपाणये रुद्रायामृतमूर्तये मां जीवय
चन्द्रजटिलित्रिपुरान्तकाय हं ह्रीं रुद्राय
ऋग्यजुः सामरूपाय रुद्रयाग्नित्रितयाय
ज्वल ज्वल प्रज्जवल प्रज्जवल
मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय
हुँ फट् स्वाहा ।।"

।। इति अघोरास्त्र मन्त्र ।।

×

३. सिद्ध वशीकरण मन्त्र—

इस मन्त्र का नवरात्रि में एक हजार बार जप करें। प्रातःकाल बिस्तर से उठने से पहले ग्यारह बार जप करें फिर पांव को नीचे रखें। इस तरह से ये मन्त्र सिद्ध कर लेने पर वशीकरण हो जायेगा—

"ॐ नमः कन्दर्पशरविजालिनी मालिनी सर्वलोकवशंकरी स्वाहा ।।"

×

४. पुत्रदाई कृष्ण मन्त्र—

इस सर्वसिद्ध सर्वप्रसिद्ध मन्त्र का सवा लाख जप कर लेने के पश्चात् नित्य प्रति एक हजार बार जप लेने से कभी भी सन्तान प्राप्ति का योग बन सकता है । संतान उत्पन्न होने तक जप करें तो संतान उत्तम और धर्म प्रेमी रहेगी ।

"ॐ देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः"

×

५. स्त्री वशीकरण सिद्ध मन्त्र—

अपनी ही स्त्री क्रुद्ध हो जाय, नाराज होकर चली जाये अथवा किसी तरह का विक्षेप हो तो इस मन्त्र को नित्यप्रति रात्रि में एक हजार बार जप करने पर सिद्धि मिलती है ।

"ॐ नमो भगवते रुद्राय
ॐ चामुण्डे (अमुकों) मे वशमानय स्वाहा"
(अमुकों के स्थान पर उस स्त्री का नाम लें)

×

६. स्त्री कष्ट निवारण सिद्ध मन्त्र—

इस दिये गए मन्त्र से सरसों अभिमन्त्रित करके उस स्त्री के सिरहाने रख दें। शीघ्र ही उस स्त्री का कष्ट दूर होगा।

"ॐ नमो भगवते मरकेतवे
पुष्पधन्वने प्रतिचालितसकलसुरासुरचित्ताय
युवतीभगवासिने ह्रीं गर्भं
चालय चालय स्वाहा।"

×

७. ज्वरशांति सिद्ध कवच—

इस कवच का शुद्ध मन से विश्वासपूर्वक सात बार पाठ सुनाने से ज्वर पीड़ा दूर होगी।

"ॐ नमो भगवति वज्रशृंखले हस्तु भक्षतु
स्वादतु अहोरक्तं पिब कृपालेन रक्ताक्षि
रक्तपटे भस्माक्षि भस्म-लिप्तशरीरे
वज्रायुधप्रकरनिचिते पूर्वान्दिशं बध्नातु
दक्षिणान्दिशम्बध्नातु पश्चिमान्दिशम्बध्नातु
नागार्थंधनाय गृहपतीन् बध्नातु नागपटीं
बध्नातु यक्षराक्षसपिशाचन् बध्नातु

प्रेतभूतगन्धर्वादयो ये ये केचित्
पुत्रिकास्तेभ्यो रक्षतु ऊर्ध्वां रक्षतु
अधो रक्षतु स्वनिकां बध्नातु जल महाबले
एह्येहि तु लोष्टि लोष्टि शतावली
वज्राग्नि वज्रप्रकेर हुँ फट्
ह्लीं ह्लीं श्रीं फट् हुं हुं क्रूं फं फं
सर्वग्रहेभ्यः सर्वदुष्टोपद्रवेभ्यो ह्लीं
अवशेषेभ्यो मां रक्षतु ।
इतीदं कवचं देवि सुरासुरसुदुर्लभं ।
ग्रहज्वरादि भूतेषु सर्वकर्मसु योजयेत् ॥"

×

८. विजय प्रदाता सिद्ध मन्त्र—

विधि व लाभ—मन्त्र जपते समय मंत्र में जहाँ "अमुकस्य अमुकेन" ये शब्द आया है यहाँ पर जिस पर जिसको विजय प्राप्त करनी हो उनके नाम कहने चाहिएं। यह मन्त्र केवल १००८ बार जपने से सिद्धि का प्रदाता है। मंत्र से अभिमन्त्रित करके सुदर्शन की जड़ को हाथ पर बांधने वाला समरांगण में विजय श्री प्राप्त करता है। अभिमन्त्रित करने में १०८ बार अभि-

मन्त्रित करके दाईं भुजा पर ताबीज बनाकर बांधने वाला वाद-विवाद न्यायालय में निश्चित ही जीतकर आता है।

"ॐ नमो विश्व रूपाय (अमुकस्य)
(अमुकेन) विजयं कुरू कुरू स्वाहा।"

×

६. विद्यार्थियों के लिए सिद्ध मन्त्र—

विद्यार्थियों द्वारा यदा-कदा इस मन्त्र को जपते रहने से स्मरण-शक्ति तीव्र बनती है, सरस्वती की कृपा बनी रहती है और परीक्षा में सफलता मिलती है।

"ॐ मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः
शाश्वती शमाः यत्।
कौन्जमिथुना देकमवधिः कामनोहितम्॥"

×

नवग्रहों के मन्त्र

—श्री सूर्य ध्यानम्—

"प्रत्यक्ष देवं विशदं सहस्रमरीचिभि:
शोभित भूमिदेशम्।
सप्ताश्वगं सस्राजहस्तमाघं देवं
भजेऽहं निहिरं हृदब्जे।"

—सूर्य गायत्री—

"ॐ आदित्याय विद्महे, मातंण्डाय धीमहि
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्"

सूर्य उपासना मन्त्र—

"ॐ ह्रौं ह्रीं सूर्याय नमः"

—सूर्य मन्त्र—

इस मन्त्र का २४ हजार जप करने पर सूर्य का अनिष्ट दूर होकर वे प्रसन्न होते हैं और शुभकर हो जाते हैं।

"ॐ ह्रौं श्रीं आं ग्रहाधिराजाय
आदित्याय स्वाहा"

×

—दारिद्र नाशन सूर्य मन्त्र—

इस मन्त्र का एक लक्ष जप करने से दरिद्रता का समूल नाश होता है ।

"ॐ ह्रीं घृणि सूर्य आदित्य श्रीं ॐ"

×

—श्री चन्द्र ध्यानम्—

शंखप्रभं वेणुप्रियं शशांकमीशान
मौलिस्थितं-मीड्यरूपम् ।
तमीवर्ति चामृतसिक्तग्रात्रमं ध्यायेद्
हृदब्जे शशिभं ग्रहेन्दम् ॥

—चन्द्र उपासना मन्त्र—

"ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः"

—चन्द्र मन्त्र—

इस मन्त्र से चालीस हजार जप करने पर चन्द्र का अनिष्ट दूर होता है ।

"ॐ श्रीं क्रीं चं चन्द्राय नमः"

×

—श्री मंगल ध्यानम्—

"प्रतप्त गांगेयनिभमं ग्रहेशं
सिंहासनस्थं कमलासिहस्तम् ।
सुरासुरैः पजितपादयुग्मं भौमं
दयालु हृदये स्मरामि ॥"

—मंगल गायत्री—

"ॐ अंगारकाय विद्महे शक्ति हस्ताय धीमहि
तन्नो भौमः प्रचोदयात् ।"

—मंगल उपासना मन्त्र—

"ॐ हुं श्रीं मंगलाय नमः"

—मंगल मन्त्र—

इस मन्त्र का २८ हजार जप करने पर मंगल का अनिष्ट प्रभाव दूर होता है और राजकार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है ।

"ॐ ऐं ह्रौं श्रीं प्रां कं ग्रहाधिपतये
भौमाय स्वाहा ।"

×

—बुध ध्यानम्—

"सोमात्मजं हंसगत द्विबाहुं
शंखेन्दुरूप ह्यासिपाशहस्तम् ।
दयानिधिं भूषणभूषितांगं बुधं
स्मरे मानक-पंकजेहम् ।।"

—बुध गायत्री—

"ॐ त्रैलोक्य मोहनाय विद्महे स्मरजनकाय
धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ।।"

—बुध उपासना मन्त्र—

"ॐ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः"

—बुध मन्त्र—

इस मन्त्र को ६८ हजार जप करने पर बुध देव का अनिष्ट दूर होता है ।

"ॐ ह्रां क्रों ड ग्रहनाथाय बुधाय स्वाहा"

×

—गुरु ध्यानम्—

तेजोमयं शक्तित्रिशूलहस्तं
सुरेन्द्रसंसेवितपादपद्मम्
मेधानिधि जानुगतद्विबाहुं गुरुं
स्मरे मानसपंकजेहम् ॥

—गुरु गायत्री—

"ॐ गुरुदेवाय विद्महे महादेवाय धीमहि
तन्नो गुरु प्रचोदयात् ।"

—गुरु उपासना मन्त्र—

"ॐ बृं बृहस्पतये नमः"

—गुरु मन्त्र—

इस मन्त्र का अड़तालिस हजार जप करने पर गु
ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को नष्ट किया जा सकता है

"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ग्लौं ग्रहाधिपथें बृहस्पत
वीं ठः श्रीं ठः ऐं ठः स्वाहा ।"

×

—शुक्र ध्यानम्—

संतप्तकांचननिभं द्विभुजं दयालुं
पीताम्बरं धृतसरोरुहद्वंद्वं शूलम्

क्रौंचासनं चासुरसेव्यपाद शुक्रं

स्मरे त्रिनयन हृदयाम्भुजेहम् ॥

—शुक्र उपासना मन्त्र—

"ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः"

—शुक्र मन्त्र—(१)—

इस मंत्र का आठ हजार जप करके दूध से हवन करने पर धातु विकार का रोग जाता रहता है।

"ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय नमः"

—शुक्र मंत्र—(२)—

इस मन्त्र का ८० हजार जप करने से शुक्र ग्रह शांत होता है और दूर की यात्रा सफल होती है।

"ॐ ऐं ज गीं ग्रहेशवराय शुक्राय नमः"

×

—शनि ध्यानम्—

नीलाजनाभं मिहिरेष्टपुत्रं ग्रहेश्वरं

पाशभुजंगपाणिम् ।

सुरासुराणां भयदं द्विबाहु स्मरे

शनिं मानसपंकजेहम् ॥

—शनि उपासना मंत्र—

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः ।"

शनि मन्त्र

इस मन्त्र का ७६ हजार जप करने से शनिग्रह से शांति मिलती है।

"ॐ ह्लीं श्रीं ग्रहचक्रवर्तिने शनैश्चराय
क्लीं ऐं सः स्वाहा ।"

×

—राहु ध्यानम्—

शीतांशुमित्रान्त कमीड्यरूपं
घोरं च वैडूर्यनिभं द्विबाहुं ।
त्रैलोक्यरक्षापरमिष्टदम् तं
राहुग्रहेन्द्र हृदये भजेहम् ॥

—राहु उपासना मन्त्र—

"ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः"

—राहु मन्त्र—

"ॐ क्रों क्रीं हुं हुं टं टंकधारिणे राहवे
रं ह्लीं श्रीं मैं स्वाहा ।"

×

—केतु ध्यानम्—

लांगुल युक्तं भयहं जनानां
कृष्णाम्बुभृत्संनिभमेकवीरम् ।
कृष्णांबरं शक्तित्रिशूलहस्तं केतुं
भजे मानसपंकजेहम् ॥

—केतु उपासना मन्त्र—

"ॐ ह्रीं केतवे नमः"

—केतु मन्त्र—

इस निम्नलिखित मंत्र का २८ हजार बार जप करने पर केतु ग्रह शान्त होता है ।

"ॐ ह्रीं क्रूं क्रूररूपिणे
केतवे ऐं सौं स्वाहा ।"

इति नवग्रह मन्त्राणि

×

श्री गणपति के मन्त्र

गणपति ध्यानम्

द्विचतुर्दशवर्णभूषितांग शशिसूर्याग्निविलोचनं सुरेशम् ।
अहिभूषितकंठमक्षसूत्रम् भ्रमयेत्तं हृदये गणेशम् ॥

गणेश गायत्री

ॐ एक दंत्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ।

(१) गणपति मन्त्र

इस मन्त्र का सवा लाख जप करें तो सर्वविघ्न दूर होकर सर्वविध मनोकामनायें पूरी होती हैं।

"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये ।
वर वरद सर्वजन मे वशमानय स्वाहा ।"

(२) विनायक मन्त्र

इस मन्त्र का छः मासों में छः लाख जप करने से सब कार्यों में सिद्धि मिलती है।

"ॐ वक्रतुण्डाय हुँ ।"

(३) उच्छिष्ट गणपति मन्त्र

लाल चन्दन अथवा श्वेत आक की जड़ से अंगुष्ठ प्रमाण की श्री गणेश मूर्ति बनाकर उसका पूजन करके इस मंत्र को एक लाख जप करने से सब इच्छायें परिपूर्ण होती हैं।

"ॐ हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा।"

(४) शक्ति विनायक मन्त्र

इस मन्त्र के निरन्तर जप से शरीर में शक्ति प्राप्त होती है।

"ॐ ह्रीं ग्रीं ह्रीं।"

(५) लक्ष्मी गणेश मन्त्र

इस मन्त्र के जप से लक्ष्मी प्राप्त होती है।

"ॐ श्रीं गं सौभाग्य गणपतये वरवरद
सर्वजनम् मे वशमानय स्वाहा।"

(६) मोहिनी गणेश मन्त्र

यह मन्त्र मोहिनी प्रयोग में काम आता है और सिद्धि प्रदान करता है।

"ॐ वक्रतुण्डैकदंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वरवरद सर्वजनम् मे वशमान स्वाहा।"

(७) हृदय गणेश मन्त्र

इस मन्त्र के जप से दूसरों के हृदय की ब जानी जाती है।

"ॐ हुँ गं ग्लौं हरिद्रागणपतये वरवरद। सर्वजनहृदयं स्तंभय स्तंभय स्वाहा ।।"

(८) उच्छिष्ट तांत्रिक गणेश मन्त्र

गणेश जी की मूर्ति स्थापना कर इस मन्त्र कृष्ण जन्माष्टमी से प्रतिदिन ४ हजार जप प्रार करें और भाद्र शुक्ल चतुर्थी की रात्रि को नीम समिधा से धतूरे के फूल तथा घी द्वारा हवन क इससे इष्टकार्य सिद्ध हो जाता है।

'ॐ नमो भगवते एकदंष्ट्राय हस्तिमुखा लम्बोदराय उच्छिष्ट महात्मने आं क्रौं ग घें घें स्वाहा।'

गणपति के तान्त्रिक मन्त्र

तन्त्रों में उच्छिष्ट गणपति के छः प्रकार के म

बताये गए हैं—

१. नर्वाण मन्त्र—

'ॐ गं हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा ।

२. द्वादशाक्षर मन्त्र—

ॐ ह्रीं गं हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा ।

३. एकोनविंशत्यक्षर मन्त्र—

ॐ नमो उच्छिष्ट गणेशाय हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा ।

४. सप्तत्रिंशदक्षर मन्त्र—

ॐ नमो भगवते एकदंष्ट्राय हस्ति मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घें घें स्वाहा ।

५. चत्वारिंशदक्षर मन्त्र—

ॐ नमो भगवते एकदंष्ट्राय हस्ति मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट महात्मने आं क्रौं ह्रीं गं घें घें उच्छिष्टाय स्वाहा ।

६. द्वात्रिंशदक्षर मन्त्र—

ॐ हस्तिमुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट महात्मने आं क्रौं ह्रीं क्लीं ह्रीं घें घें उच्छिष्टाय स्वाहा।

७. एकत्रिंशदक्षर मन्त्र—

ॐ नमो हस्तिमुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट महात्मने क्रां क्रीं ह्रीं घें घें उच्छिष्टाय स्वाहा।

इन मन्त्रों में से प्रथम मन्त्र का एक हजार और पाँचों में से किसी एक का ५४० जप (पांच माला) नित्य प्रति करें। फिर उसी मन्त्र से भोजन के समय प्रत्येक ग्रास ग्रहण करने से सर्व कामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं।

×

श्री हनुमान ज़ी के मन्त्र

श्री हनुमत् ध्यानम्

रामेष्टमित्रं जगदेकवीरं
प्लवंगराजेन्द्रकृत प्रणामम् ।
सुमेरूशृंगागमचिन्त्यामाद्यं
हृदि स्मेरहं हनुमंतमीड्यम् ।।

(१) हनुमान्माला मन्त्र—

श्री हनुमान जी के सम्मुख इस मन्त्र के ५१ पाठ करे और भोज पत्र पर इस मन्त्र को लिखकर पास में रखले तो सर्व कार्यों में सिद्धि मिलती है ।

'ॐ वज्रकाय वज्रतुण्ड कपिल पिंगल ऊर्ध्वकेश महाबल रक्तमुख तडिज्जह्व महारौद्र दंष्ट्रोत्कट कहहकरालिने महादृढ़प्रहारिन लंकेश्वरवधाय महासेतुबंध महाशैलप्रवाह गगनचर एह्येहि भगवन्महाबल पराक्रम भैरवाज्ञापय ऐह्येहि महारौद्र दीर्घपुच्छेन वेष्टय वैरिणं भंजय भंजय हुँ फट् ।।'

(२) हनुमद् उपासना मन्त्र—

इस मन्त्र का पाठ ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके करना चाहिए। अष्टगंध से 'ॐ हनुमते नमः' ये लिखकर हनुमान जी को सिन्दूर और चमेली का शुद्ध तेल केशर और लाल चन्दन का गंध लगायें। कमल, केवड़ा और सूर्यमुखी के फूलों से पूजन करें। इस प्रकार देवशयनी एकादशी से देवोत्थानी एकादशी तक नित्य पूजन करें। तुलसी पत्र पर 'राम-राम' लिखकर भी चढ़ायें। इस प्रयोग से हनुमान जी प्रसन्न होकर अभीष्ट सिद्धि प्रदान करेंगे।

"ॐ श्री गुरुवे नमः

ॐ जेते हनुमंत रामदूत चलो वेग चलं लोहे का गदा, वज्र का लंगोट, पान का बीड़ा, तेल सिंदूर की पूजा, हंहकार पवनपुत्र कालंच-चक्रहस्त कुबेरखिलुं मरामसान खिलुं भैरव-खिलुं अक्षखिलुं वक्षखिलुं मेरे पे करे घाव छाती फट् फट् मर जाये देव चल पृथ्वीखिलुं साडे वारे जात की बात को खिलुं मेघ को

खिलुं नव कौड़ी नाग को खिलुं येहि येहि आगच्छ आगच्छ शत्रुमुख बंधना खिलुं सर्व-मुखबंधनाम् खिलुं काकणी कामनी मुखग्रह-बंधना खिलुं कुरू कुरू स्वाहा।'

(३) हनुमद् मन्त्र—

इस मन्त्र का नित्य प्रति १०८ बार जप करने से सिद्धि मिलती है।

'ॐ-ऐं ह्रीं हनुमते रामदूताय
लंकाविध्वंसनायांजनीगर्भसंभूताय
शाकिनी डाकिनी विध्वंसनाय
किलि किलि बुवुकरेण विभीषणाय
हनुमद्देवाय ॐ ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां फट् स्वाहा।'

(४) हनुमन्मन्त्र (उदररोग नाशक)—

इस मन्त्र को प्रतिदिन ११ बार पढ़ने से सब तरह के पेट के रोग शांत हो जाते हैं।

'ॐ यो यो हनुमंत फलफलित
धगधगित आयुराषः षरूडाह।'

(५) महावीर मन्त्र—

हनुमान जी का ध्यान करके इस मन्त्र का २२

हजार बार जप कर ले तो केले और आम के फलों से हवन करें। हवन करके २२ ब्रह्मचारियों को भोजन करा दें। इससे भगवान महावीर प्रसन्नतापूर्वक सिद्धि देते हैं।

'ॐ ह्रौं हस्फ्रें ख्फ्रें हस्रौं हस्ख्फ्रें हसौं
हनुमते नमः ।'

×

श्री सुग्रीव मन्त्र

सुग्रीव ध्यानम्

बालं षोडशहायनं कपिपतिं वह्निम प्रभाभासुरं
दोर्भिवृतगदा धनुःशरचयान्संविभ्रतं सादरम्।
वंदे देवस्य रूपिणं रघुपतिं चाराधयन्तं मुदा
ध्यायेऽहं भगवन्तमर्कनयनं सुग्रीवदेव हृदि ॥

सुग्रीव मन्त्र

'ॐ ह्रीं ऐं क्लीं सौः सुग्रीवदेवाय।
क्रौं ठः क्रूं ठः ह्रौं ठः स्वाहा ॥'

(इस मन्त्र के केवल १०८ बार जप करने से सिद्धि मिलती है)

×

श्री नरसिंह भगवान के मन्त्र

(१) भय नाशन नृसिंह मन्त्र—

इस मन्त्र को ११ हजार जपने से भूत प्रेतादि का भय दूर हो जाता है।

'ॐ नमो भगवते नरसिंहाय
नमस्ते नमस्ते जस्ते जसे
आविशः विर्भव वज्र वज्रदंष्ट्र
कमाशंया बंधय्र बंधय नमो
ग्रस ग्रस स्वाहा—
अभय विभूयिष्ठा ॐ क्षौं ।'

(२) जयप्रद नृसिंह मन्त्र —

इस मन्त्र को १ लाख जपकर एक माला नित्य जपने से जय प्राप्त होती है।

'ॐ जय जय श्री नृसिंह'

(३) गर्भ रक्षक नृसिंह मन्त्र—

इस मन्त्र को पहले नवरात्रि में १०८ बार जप-करके सिद्ध करें फिर सरसों पर इस मन्त्र को अभि-मन्त्रित कर ताली बजाकर जिसके पास या जिसके निमित्त पढ़ेंगे उसके गर्भ की रक्षा नृसिंह भगवान

करते हैं। इस मंत्र को सिद्ध करने वाले मन्त्र लिखकर गर्भिणी के पास या सिरहाने भी रखते हैं।

'ॐ नरसिंहा हिरण्यकशिपुवक्षःस्थल-विदारणाय त्रिभुवन व्यापकायां भूत-प्रेत-पिशाच डाकिनी कुलोन्मूलानाय स्तम्भोद्भ-वाय समस्त दोषान् हर हर, विसर विसर, पच पच, हन हन, कंपय कंपय, मथ मथ, ह्लीं ह्लीं ह्लीं, फट् फट्, ठः ठः ठः, एहि एहि राद्राज्ञापति स्वाहा। ॐ ह्लीं ह्लीं ह्लीं हुं हु हुं फट् स्वाहा॥'

(४) विघ्न निवारक नृसिंह मन्त्र—

विधि—एक हजार जप से विघ्न दूर होते हैं। नित्य जाप से धन-धान्य की वृद्धि होती है।

'ॐ मृं नृं नृं नृसिंहाय नमः।'

(५) लक्ष्मी नृसिंह मन्त्र—

इस मन्त्र को ढाई लाख जपने से लक्ष्मी प्राप्ति का सिद्ध योग बनता है।

'ॐ ह्लीं क्षौं श्री लक्ष्मी नृसिंहाय नमः।'

×

श्री कार्तवीर्यार्जुन के मन्त्र

—कार्तवीर्यार्जुन ध्यानम्—

सहस्रभुजमंडलीजिततभीचरेणधिपं,
हिमांशु सदृशाननम् धृतसहखतूर्णीकरम् ।
सिताम्बर धरम् सदा तुरगराजमध्यस्थितं,
स्मरामि सदा हृदि तु कार्तवीर्यार्जुनम् ॥

(१) कार्तवीर्यार्जुन मन्त्र (प्रथम)—

'ॐ प्रौं ह्रीं क्लीं व्रों जां श्रीं क्रौं
ऐं ह्रौं हुं फट् कार्तवीर्यार्जुनाय स्वाहा ।'

(२) कार्तवीर्यार्जुन मन्त्र (द्वितीय)—

'ॐ फ्रों व्रीं क्लीं भ्रूं आं ह्रीं क्रौं
श्रीं हुं फट् कार्तवीर्यार्जुनाय नमः ।'

(उपरोक्त दोनों मन्त्रों में से किसी एक का एक लाख जप कर लेने पर गुम हुई वस्तु मिल जाती है)

(३) कार्तवीर्यार्जुन आकर्षण मन्त्र—

'ॐ झां झां झां हां हां हां हें हें स्वाहा'

(इस मन्त्र का केवल एक सहस्र जप करने पर

किसी वस्तु और मनुष्य का भी आकर्षण हो जात है। यदि एक सहस्त्र जपने पर कार्य सिद्ध न हो त जब तक सिद्धि न मिले तब तक इसका जप कर का विधान है)

(४) कार्तवीर्यार्जुन राजवश्य मन्त्र—-

'ॐ नमो भगवते श्री कार्तवीर्यार्जुना सर्वदुष्टांतकाय तपोबल पराक्रम परिपालि सप्तद्विपाय सर्वराजन्यचूड़ामणिये महाशक्ति मते सहस्रबाहवे हुं फट् ।'

(इस मन्त्र का दस हजार जप करने पर सि प्राप्त होती है)

×

श्री नारायण के मन्त्र

नारायण गायत्री

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीम तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ।

नारायणास्त्र मन्त्र

नित्य प्रति नारायण गायत्री का जप करके इ नारायणास्त्र मन्त्र का पाठ करने से सुरक्षा मिलती

और ज्वरादि की पीड़ा दूर होती है । दीपक जलाकर अगरबत्ती के साथ इसका जप किया करें ।

'हरिः ॐ नमो भगवते श्री नारायण नमो नारायणाय विश्वमूर्तये नमः श्री पुरुषोत्तमाय दुष्टदृष्टि प्रत्यक्ष वापरोक्षं अजीर्णं पचविषूचिकां हन हन ऐकाहिकं द्व्याहिक त्याहिकं चातुर्थिकं ज्वरं नाशय नाशय शोषयं शोपय आकर्षय आकर्षय शत्रुन मारय मारय उच्चाट्योचाट्टय विद्वेषय विद्वेषय स्तम्भय स्तम्भय निवारय निवारय विनैंहन हन दह दह मथ मथ विध्वंसय विध्वंसय चक्रं गृहीत्वा शीघ्रमागच्छामच्छ चक्रेण हत्वा परविद्यां छेदय छेदय भेदय भेदय चतुःशीतानि विस्फोटय विस्फोटय अर्श वात शूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद पादवाह्याद्वि विभुव्यन्तरिक्षे अन्येऽपि केचित् तान्द्वेषाकान्सर्वान् हन हन विद्युन्मेघदीपवताटवीसर्वस्थान रात्रिदिनपथ चौरान् वशं कुरू कुरू हरिः ॐ नमो भगवते ह्रीं हुं फट् स्वाहा ठः ठं ठं ठं ठः नमः ।'

×

श्री मृत्युञ्जय मन्त्र

मृत्युञ्जय ध्यानम्

चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजं सुरपतिं पियूषपात्रं वहन्
हस्ताब्जेन सुधांशुकोटिविमलं हास्यास्य-
पकेरूहम्
सूर्येन्द्वायाग्नि विलोचनं करतलैः पांशाक्षसू
कुशांभोजान् विभ्रतमक्षय पशुपतिं मृत्युञ्ज
भावये

शिव गायत्री

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीम
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।

लघु मृत्युञ्जय मन्त्र

इस मन्त्र के जप से आत्मोन्नति के साधनं
निरन्तर वृद्धि का योग बनता है। किसी भी प्र
के असाध्य रोग में इसका पाठ करने से आशा
लाभ होता है। स्वस्थ व्यक्ति के पाठ करने
रोगादि पास नहीं आते।

'ॐ जूं सः हंसः मां पालय पालय
सोहं सः जूं ॐ।'

इस मन्त्र में जिस स्थान पर हंसः मां ये शब्द हैं वहां जिसके लिए जप किया जा रहा है उसका नाम भी लिया जा सकता है।

मृत्युंजय मन्त्र

यजुर्वेदीय संहिता में मन्त्र इस प्रकार है—

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।

मृत्युंजय जप को रोगनाशक और शान्तिदायक माना गया है। ऐसी मान्यता है कि मृत्युंजय जप से रोग शैया पर पड़ा रोगी भी शीघ्र रोग मुक्त हो जाता है। रोग या अनिष्ट की आशंका होने पर इस मन्त्र का जप स्वयं भी किया जा सकता है।

विधि—महामृत्युंजय मन्त्र का चित्र लगाकर इस मन्त्र का सवा लाख जप ४५ दिन में कर लें। रोगी को निश्चित रूप से लाभ मिलेगा। पूरी निष्ठा एवं पवित्रता से मन्त्र का जाप किया जाये।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ऊर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ॥

×

श्री भैरव के मन्त्र

बटुक भैरव ध्यान

कपालहस्तं भुजगोपवीतं कृष्णच्छ
दण्डधरं त्रिनेत्रं अचिन्त्यमाद्यं मधुपानसक
हृदि स्मरेद्भैरवमिष्टदम् तम् ।।

(१) बटुक भैरव मन्त्र—

इस मन्त्र का छः लाख जप करने से मनोकाम
पूर्ण होती है ।

'ॐ अं क्लीं वीं रं ध्र वं घ्रीं ह्लीं
बटुक भैरवाय नमः स्वाहा ।'

(२) महाकाल भैरव मन्त्र—

इस मन्त्र का २१ हजार जप करने से महाक
भैरव प्रसन्न होकर अभीष्ट सिद्धि प्रदान करते हैं।

'ॐ हं ष नं ग फं सं ख
महाकाल भैरवाय नमः ।'

गन्धर्वराज मन्त्र

गन्धर्वराज ध्यानम्

कन्यावृक्ष समासीन उद्यदादित्यसंनिभम् ।
अंकस्थकन्या-गधर्वं विश्वावसुप्रभुं स्मरेत् ॥

(१) गन्धर्वराज मन्त्र—

इस मन्त्र का प्रयोग कन्या की वर प्राप्ति में रामबाण है । सर्वप्रथम मंत्र का दस हजार जप करें । फिर गुग्गुल, विल्वपत्र और घृत से दशांश हवन, दशांश तर्पण, दशांश मार्जन और तब ब्राह्मण को भोजन करा दें कार्य अवश्य सिद्ध होता है ।

'ॐ क्लीं विश्वासु नाम गंधर्वः कन्या नामधिपतिः लभामि देवदत्तां कन्यां सुरुपां सालंकारां तस्मै विश्वावसवे स्वाहा ।'

(२) सिद्ध गन्धर्वराज मन्त्र—

'ॐ अस्य श्री गन्धर्वराजमंत्रस्य कामदेव ऋषिः विराट् छंदः कन्याप्रदः श्री गंधर्वराज देवता क्लीं वीजं स्वाहा शक्तिः अमुकस्य अभिलषित कन्याप्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः ।'

यह कहकर निम्नलिखित अंगन्यास करें—

ॐ क्लीं विश्वावसु नाम गंधर्व हृदयाय नमः।

ॐ क्लीं कन्यानामधिपतिः शिरसे स्वाहा।

ॐ क्लीं लभामि देवदत्तां शिखायै वषट्।

ॐ क्लीं कन्या सुरूपा कवचाय हुं।

ॐ क्लीं सालकारां नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ क्लीं तस्मै विश्ववासवे स्वाहा।

अस्त्राय फट्॥

इसके बाद निम्नलिखित अंगुल्यादिन्यास करें—

ॐ क्लीं विश्वावसु नाम गन्धर्व अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ क्लीं कन्यानामधिपतिः तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ क्लीं लभामि देवदत्तां मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ क्लीं सालंकारां कनिष्ठाभ्यां नमः।

ॐ क्लीं विश्ववसवे स्वाहा।

करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः॥

×

विवाह सिद्धिदायक मन्त्र

—भुवनेश्वरी ध्यानम्—

उद्यद्दिनेश द्युतिमिन्दुकिरीटतुंगकुचां
नयनत्रययुक्तां ।
स्मरेमुखीं वरदांकुशपाशांभोजकरां
प्रभजे भुवनेशीम ॥

—सम्मोहन गायत्री—

ॐ कामदेवाय विद्महे पुष्पवाणाय धीमहि
तन्नोऽनंग प्रचोदयात् ॥

(१) विवाह मन्त्र—

इस मन्त्र का एक हजार जप कर लेने से विवाह कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न हो जाता है।

'ॐ वह्नि प्रेयसी स्वाहा'

(२) स्वयंवर कला मन्त्र—

इस मन्त्र का दस हजार जपकर हवन करें। मन्त्र जप किसी भी शुभ मुहूर्त में प्रारम्भ कर दें। नवरात्रि तक विवाह कार्य में सफलता मिलती है।

'ॐ ह्रीं योगिनी योगिनी योगश्वरि योगेश्वरि योगभयंकरी सकलस्थावरजंग-

मनस्य मुखं हृदयं मम वशमाकर्षयाकर्षय स्वाहा।'

(३) विजयसुन्दरी मन्त्र—

इस मन्त्र का सात दिन तक एक-एक हजार जप नित्य करने से वर कन्या से दूर हो या कन्या वर से दूर हो जो भी इस जप को करेगा उसे वहीं बैठे सिद्धि मिलेगी। जप से आठवें दिन सफलता मिलती है।

'ॐ विजय सुन्दरीं क्लीं'

(४) कुमार मन्त्र—

इस मन्त्र का कन्या जिस वर का ध्यान कर दस हजार जप करेगी उसे शीघ्र ही वर प्राप्ति होगी।

'ॐ ह्रीं कुमाराय नमः स्वाहा।'

(५) वशीकरण मन्त्र—

इस मन्त्र को एक हजार जपें और रोली, चंदन, गोरोचन तथा कपूर गौ के दूध में घिसकर तिलक लगाकर घर से निकलें। बाहर जाने से काम सिद्ध होता है।

'ॐ ह्रीं सः अमुकं मे वशमानय स्वाहा।'

×

श्री सरस्वती के मन्त्र

बलबुद्धि और स्मरणशक्ति बढ़ाने वाले मन्त्रों का उल्लेख किया जा रहा है। ये अनुभूत सत्य है कि विद्यार्थियों के लिए विद्या प्राप्ति में ये मन्त्र पूर्ण प्रभावशाली हैं। सरस्वती मंत्र ४ वर्षों में फलीभूत होते हैं और इनके भेद निम्नलिखित प्रकार से हैं—

—सरस्वती ध्यानम्—

वाणीं पूर्णंनिशाकरोज्जवलमुखीं
कर्पूरकुन्दप्रभां,
चन्द्रार्धांकितमस्तकां निजकरैः
संबिभ्रतीमादरात्।
वर्णामक्षगुणं सुधाढ्य कलशं
विद्यां च तुंगस्तनी,
दिव्यैराभरणैर्विभूषितनुं
सिंहाधिरुढां भजे॥

— सरस्वती (वाग्देवी) गायत्री—

वाग्देव्यै च विद्महे कामबीजायै धीमहि,
तन्नो देवीः प्रचोदयात्॥

(१) वाग्देवी मन्त्र—

प्रथम प्रयोग विधि—कृत्तिका नक्षत्र म थूहर का वृन्दा लाकर मन्त्र से अभिमन्त्रित करके अपने पास रखें और मन्त्र का एक लक्ष जप करें।

द्वितीय प्रयोग विधि—लाल कनेर की माला बनाकर उसे मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके नदी में डालें और एक लक्ष जप जरें। इन दोनों प्रयोगों से वाक्सिद्धि मिलती है।

'ॐ ह्रीं श्रीं मानसे सिद्धिंकरीं ह्रीं नमः।'

(२) वाणी सरस्वती मन्त्र—

नीचे लिखे दोनों मन्त्रों में से किसी एक का भी एक लाख जप करने से सिद्धि होती है।

प्रथम—'ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं सरस्वत्यैनमः।'

द्वितीय—'ॐ नमो भगवती सरस्वती वाग्वादिनी ब्रह्माणी ब्रह्मरूपिणी वुद्धिवर्द्धिनी मम विद्यां देहि देहि स्वाहा।'

(३) नील सरस्वती मन्त्र—

इसका भी एक लक्ष जप करने से सिद्धि होती है।

'ॐ ह्रीं ऐं हुँ नीलसरस्वतो फट् स्वाहा।'

×

लक्ष्मीप्रद मन्त्र

(श्री लक्ष्मी प्रद मन्त्रों को जपने से तीन वर्षों में सिद्धि होती है।)

—लक्ष्मी ध्यानम्—

लक्ष्मीं पद्मासनगतकटिं
सूर्यशीतांसुनेत्रा मुद्यद्भास्व
त्वकरचयरुचिं पद्मशंखासिपाणिम् ।
नानामुक्तामणिसुशकलाभूषितांगां द्विहस्तां
नित्यं लोकत्रियफलदां नौम्यहं भक्तिपूर्वकम् ।

—लक्ष्मी गायत्री—

ॐ महालक्ष्मै विद्महे महाश्रियै च धीमहिं
तन्नो श्रीः प्रचोदयात् ।

—ज्येष्ठा लक्ष्मी गायत्री—

ॐ रक्तज्येष्ठायै विद्महे नीलज्येष्ठायै धीमहि
तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात् ॥

(१) धनदायी लक्ष्मी मन्त्र—

इस मन्त्र का एक लाख जप करने से अपार धन प्राप्ति का योग बनता है।

'ॐ नमो धनदायै स्वाहा ।'

(इसी मन्त्र से अभिमन्त्रित करके एक अंजन भी बनता है जिससे नेत्र ज्योति बढ़ती है। विधि ये है कि अनार के बीज का रस निकालकर उसे मन्त्र से अभिमन्त्रित करें। फिर काजल में इस रस को मिलाकर अंजन तैयार करलें। इस अंजन को प्रतिदिन मन्त्र पढ़कर नेत्रों में लगायें।)

(२) ज्येष्ठालक्ष्मी मन्त्र—

सवा लाख जप करने से ये मन्त्र सिद्ध होता है।

'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ज्येष्ठालक्ष्मी स्वयंभुवे ह्रीं ज्येष्ठायै नमः।'

(३) महालक्ष्मी मन्त्र—

इस मन्त्र का कार्तिक मास में सवा लाख जप करना चाहिए।

'ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।'

(४) सिद्ध लक्ष्मी मन्त्र—

इस मन्त्र का दस सहस्र जप करने पर मनुष्य जो भी प्रश्न करेगा वह पूरा होगा।

'ॐ ऐं क्लीं सौं ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवति मातंगीश्वरी सर्वजनमनोहारिणी सर्वराज-

वशंकरी सर्वमुखरंजनि सर्वस्त्रो पुरुषवशंकरी सर्वदुष्टमृगवशंकरी सर्वलोकवशंकरी ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ॐ ।'

(५) लक्ष्मी यक्षिणी मन्त्र—

लाल कनेर के फूल से पूजन कर हवन करने पर एक लाख जप से सिद्धि देता है।

'ॐ ऐं लक्ष्मीं श्रीं कमलधारिणी कलहंसी स्वाहा ।'

(६) लक्ष्मी स्तोत्र—

इस स्तोत्र का पाठ करने से लक्ष्मी स्थिर रहती है।

'त्रैलोक्य पूजिते देवि कमले विष्णुवल्लभे ।
यथा त्वमचला कृष्णे तथा भवमयि स्थिरा ॥
ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चला भूतिहरिप्रिया ।
पद्मा पद्मालया संपदुच्चैः श्री पद्मधारिणी ॥
द्वादशैतानि नमानि लक्ष्मी संपूज्यः यः पठेत् ।
स्थिरा लक्ष्मीर्भवेत्तास्व पुत्रदारादिभिः सहा ॥

×

महाकाली मंत्र

मन्त्रशास्त्र और तन्त्रविज्ञान में महाकाली और उसकी विद्याओं का अद्भुत विस्तार है। यहाँ महाकाली के मन्त्रों में से केवल एक अनुभूत मन्त्र को दिया जा रहा है। इस मन्त्र का रात्रि में १२ बजे शुद्ध चित्त से केवल ५० बार जप करने से शत्रु अनुकूल हो जाते हैं। कार्य का विघ्न दूर होकर वह काम सफलतापूर्वक सम्पन्न होता है।

—काली ध्यानम्—

शूलाब्जपाशांकुशपद्महस्तां चतुर्भुजां धूम्रनिभां त्रिनेत्रं। सिंहसनस्थां धृतपीतवस्त्रां ध्यायेन्महेशीम् हृदि कालरात्रिम्॥

—काली गायत्री—

ॐ कालिकायै विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि तन्नो घोरा प्रचोदयात्॥

(१) श्री काली मन्त्र--

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं कालीश्वरी सर्वजन मनोहारिणी सर्वमुख स्तंभिनि सर्वराजवश-करि सर्वदुष्टनिर्दलनि सर्वस्त्रीपुरुषाकर्षिणि वधी शृंखलास्त्रोटय त्रोट्य सर्वशत्रून भंजय भंजय द्वेषीन् निर्दलय निर्दलय सर्वान् स्तभय स्तंभय मोहनास्त्रेण द्वेषिणमुच्चाटय उच्चाटय सर्वं वशं कुरु कुरू स्वाहा। देहि देहि सर्वं कालरात्रिकामिनी गणेश्वर्यै नमः ॥'

(२) भद्रकाली मन्त्र--

(इस मन्त्र का दस हजार जप करने से बंधन से मुक्ति मिलती है। कृषि कार्य में लाभ पाने के लिए इस मन्त्र का जप सबसे उत्तम है।)

'ॐ क्रीं क्रीं क्रीं हु हु ह्रीं ह्रीं भैं भद्र-कालीं भैं ह्रीं ह्रीं हुं हु क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा।'

तारा मन्त्र

—तारा ध्यानम्—

देवीपन्नगभूषिताम् हिमरुचिं शीतांशुशंखप्रभां
मुक्तारत्नपरीतकंठवलयां रक्ताम्बरं बिभ्रती।
शूलाक्षासिगदाधरां सुरगणै बैकुण्ठमुख्यैः
स्तुतां नित्यं लोकत्रयैकरक्षणपरां तारां
त्रिनेत्रां भजे ॥

(१) तारा मन्त्र—

इस मन्त्र का एक लाख जप करने से सिद्धि होती है।

'ॐ ऐं हुं तारे फट् स्वाहा।'

(२) उग्रतारा मन्त्र—

इस मन्त्र का ५० हजार जप करने से सिद्धि होती है।

'ॐ ह्रीं स्त्रीं ह्रीं ऐ हुं उग्रतारे फट् स्वाहा।'

×

छिन्नमस्ता मन्त्र

—छिन्नमस्ता ध्यानम्—

एणांकांशुपरेशभालफलकां बालार्ककोटिप्रभां
ज्वालाबद्धमहार्घरत्ननिचयां
कंदर्पदर्पोज्जवलाम् ।
शूलाक्षांकुशपाशवेणुमुसलांभोजाभयान् बिभ्रतीं
भक्तेष्टां छिन्नमस्तकां भगवती
ध्यायेद् हृदब्जे सदा ॥

—छिन्नमस्ता गायत्री—

'ॐ विरोचन्यै विद्महे छिन्नमस्तायै धीमहि
तन्नो देवीः प्रचोदयात् ।'

—छिन्नमस्ता मन्त्र—

'ॐ ह्रीं श्रीं छ्रीं छिन्नमस्तके फट् स्वाहा ।
ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीयैं ह्रीं ह्रीं
फट् स्वाहा ।'

(इस मन्त्र का सवा लाख जप करने से बन्धन मोक्ष और राजकार्यों में सफलता की सिद्धि मिलती है ।)

×

श्यामा मन्त्र

—श्यामा ध्यानम्—

त्रैलोक्यपूजितपदाम्बुरूहद्वयीतां कृष्णाम्बुभृत्सदृशरूपधरां त्रिनेत्राम । शूलसिशंख महतीः स्वभुजैर्वहन्तीं श्यामा स्मरे शवशरीरकृतासनस्थाम् ।।

—श्यामा मन्त्र—

'ॐ श्रीं ह्लीं क्रां क्रीं क्रैं क्रौं क्रः सुधारसे श्यामे कृष्णशापं विमोचयामृतं स्त्रावय स्वाहा ।'

(इस मन्त्र का नित्य पाँच माला जप करने से जय प्राप्ति होती है तथा समस्त रोग नष्ट होते हैं ।)

×

बगलामुखी मन्त्र

—बगलामुखी ध्यानम्—

नानारत्ननिबद्धरभ्यरसनाँ पीताँबराँ भाग्यदाँ
वर्मांश्वग्निशशाँशकरम्यनयनाँ सिंहासनस्थाँ-
पराम् ।
सद्रागेयनिभाँमहाधर्मंणिभिरूद्‌भासिताँगी सदा
देवेशींबगलामुखीं हृदि भजे भक्तेष्टदाँ भक्तिदाँ ।।

—बगलामुखी मन्त्र—

(इस मन्त्र का सवा लाख जप करने से राजकीय व अन्यान्य शत्रुओं का स्तम्भन हो जाता है। दूर हो रही वार्ता, भविष्य का ज्ञान इस मन्त्र की सिद्धि से प्राप्त होता है।)

'ॐ ह्लीं भगवति बगलामुखी देवि सर्व-दुष्टानाँ वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धि विनाशाय विनाशाय ह्लीं ॐ स्वाहा।'

×

वज्रयोगिनी मन्त्र

—वज्रयोगिनी ध्यानम्—

इन्द्राग्निसूर्य नयनाँ पाशाँकुश धराँ शिवाम्।
द्विभुजाँ सिंहमध्यस्थाँ भजेऽहं वज्रयोगिनीम्॥

—वज्रयोगिनी मन्त्र—

(इस मन्त्र का नित्यप्रति त्रिकाल समय पर १०८ जप करने से शरीर पुष्ट होता है। वज्रयोगिनी देवी शरीर के समस्त रोग दूर करके देह को वज्र समान बनाकर सिद्धि प्रदान करती है।)

'ॐ ह्रीं वज्रयोगिन्यै स्वाहा।'

×

वाराही मन्त्र

—वाराही ध्यानम्—

चन्द्रार्द्धचूड़ां विमलां भुजाभ्यां शूलां-कुशौ श्यामसुखीं वहतीम्। सूर्याग्नि चन्द्रीकृत-दृष्टिपातां ध्याये हृदब्जे सततं वराहीम् ॥

—वाराही मन्त्र—

(इस मन्त्र का नित्य अर्द्धरात्रि को १०८ जप करें। सिरहाने जलकुम्भ पर दीपक जलाकर रखें, स्वप्न में देवी दर्शन देकर गुप्तवार्ता बता जाती है।)

'ॐ ऐं ग्लौं लं ऐं नमो भगवति वार्ता-लिवाराहीदेवते वराहमुखि ऐं ग्लौं ठः ठः स्वाहा।'

×

शारदा मन्त्र

—शारदा ध्यानम् —

षड्भुजां त्रिनयनां स्मिताननां शांडिल्येन नमितांघ्रिपंकजां पर्वतस्थितवतीं धृतशूलां शारदां भगवतीं हृदि ध्याये ॥

—शारदा मन्त्र—

(इस मन्त्र का नित्य प्रातः समय १ माला जप करने से वाक्सिद्धि, विद्या प्राप्ति और अध्यात्मबल बढ़ता है ।)

'ॐ ह्रीं क्लौं सः नमो
भगवत्यै शारदायै ह्रीं स्वाहा ।'

×

कामेश्वरी मन्त्र

—कामेश्वरी ध्यानम्—

त्रिलोचनां सूर्यसहस्रशोभाँ सिंहासनस्थाँ द्विभुजाँ धृतासिम् । पीताँम्बराँ विष्णुमहेश-सेव्याँ कामेश्वरी ताँ हृदये स्मरामि ।।

—कामेश्वरी मन्त्र—

(इस मन्त्र का नित्य जाप करने से पुरुषत्व प्राप्ति और विवाह सुख में वृद्धि होती है ।)

'ॐ ह्रीं श्रीं द्राँ द्रीं क्लीं क्लुं जं जं
वनाख्ये कामेश्वरी वाणदेवते स्वाहा ।'

×

गौरी मन्त्र

—गौरी ध्यानम्—

गौरागीं धृतपंकजा त्रिनयनाँ श्वेताम्बरां सिंहगाँ चन्द्रोद्भाषितशेखराँ स्मितमुखीं दोर्भ्याहुं वहतीं गदाम् । विधि चन्द्राम्बुज योचिकामत्रिदशैः संपूजिताँध्रिद्वयों गौरीं मानसपंकजे भगवतीं भक्तेष्टदाँ ताँ भजे ।

—गौरी मन्त्र—

नित्य मध्यान्ह में १०८ जप करने से सन्तान-वृद्धि और स्त्री पुत्रादिकों से सुख की प्राप्ति होती है ।

'ॐ ह्रीं श्रीं ग्लौं ग गौरीं गीं स्वाहा ।'

—त्रैलोक्य मोहन गौरी मन्त्र—

इस मन्त्र का नित्य १०८ जप करने से मोहन सिद्धि होती है ।

'ॐ ह्रीं नमो ब्रह्मश्रीराजते राजपूजाये जय विजय गौरि गाँधारी त्रिभुवनवशंकरी सर्वस्त्रीपुरुषवशंकरी सु सु दु दु घे घे वा वा ह्रीं स्वाहा ।'

×

अन्नपूर्णा मन्त्र

—अन्नपूर्णा ध्यानम्—

चन्द्रार्द्धमौलिमं द्विभुजाँ त्रिनेत्रां शूलाक्ष-भाले सततं वहन्तीम् । रणासनस्थाँ भुजगोप-वीतं ताभन्नपूर्णां हृदये स्मरामि ॥

—अन्नपूर्णा मन्त्र—

देश, ग्राम अथवा गृह में अन्न की कमी होने पर इस मन्त्र का जाप करने से अन्नपूर्णा देवी प्रसन्न होती हैं । नित्य एक माला जाप करते रहने से गृह में कभी अन्न की कमी नहीं आती, धनधान्य में वृद्धि होती है ।

'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवती
माहेश्वरी अन्नपूर्णे स्वाहा ।'

×

कुलवागीश्वरी मन्त्र

—कुलवागीश्वरी ध्यानम्—

आगमाँमृतमंजरीं दोभ्यीं त्रिशूलासिधराँ रक्ताभाँ वह्निरुपिणिं अक्षसिंहासनगताँ कुलवागीश्वरीं भजे ।

—कुलवागीश्वरी मन्त्र—

इस मन्त्र का १०८ माला में जप त्रिकाल समय करना चाहिए । इससे कुल की मान्यता, ऐश्वर्य, यश में वृद्धि और सर्वकार्य सिद्धि होती है ।

'ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं हुं ऊ उषहस्ते कुल-वागीश्वरी ऐं ठः ॐ ठः खीं ठः स्वाहा ।'

×

इन्द्राक्षी मन्त्र

—इन्द्राक्षी ध्यानम्—

मालास्यकुशपद्मयुग्मकधराँ साहस्रनेत्रकराँ
मत्तौरावण पृष्ठमाँ शशिमुखी
त्रैलोक्यरक्षापराम् ।
दोर्भिर्गीतरताँ सरोजसदृषी ब्रह्मादिदैवैः
स्तुतामिन्द्राक्षी जनमातरं हृदि भजे
कारूण्यचिद्रूपणीम् ॥

—इंद्राक्षी मन्त्र—

इस मन्त्र के सवा लक्ष जप से यश प्राप्ति और ऐश्वर्य वृद्धि होती है।

'ॐ क्रीं क्रीं हुं हुं ग्लौं ह्रीं श्रीं ऐं इन्द्रक्षि वज्रहस्ते सीं ह्रीं ग्लौं हुं हुं क्रीं क्रीं ॐ ऐं फट् स्वाहा ।'

×

मातंगी मन्त्र

—मातंगिनी ध्यानम्—

चन्द्रार्धांकितशेखरां त्रिनयनाम्
कोटिन्दुसूर्यप्रभां,
नानारत्नसहस्रबद्धरशनां प्रेतासने संस्थिताम्।
शंखं तोमरपट्टिशाब्जयुगलां योर्भिवहंती मुद्रा,
ध्यायेऽहं हृदये सदा भगवती
मातंगिनी हरिणीम् ॥

(१) मातंगी मन्त्र—

'ॐ क्रीं छ्रीं महाचक्रणी ऐं ठः स्वाहा ।'

(२) उच्छिष्ट मातंगी मन्त्र—

'ॐ क्रौं श्रीं प्रीं छ्रीं उच्छिष्ट चाँडालिनी देवी महापिशाचिनी मातंगिनी देवि क्रौं ठः ह्लीं ठः ऐं च स्वाहा ।'

इन उपर्युक्त मन्त्रों का एक-एक लाख जप करने से राजकीय गुह्य प्रश्नों का उत्तर मिलता है। भूत-वार्ता का ज्ञान होता है। भूतवार्ता का ज्ञान करने में उच्छिष्ट मातंगी मन्त्र सिद्ध मन्त्र है।

×

रक्तादेवी मन्त्र

—रक्तादेवी ध्यानम्—

शीतांँशुबालार्ककृशानुनेत्रांँ चतुर्भुजामेण-त्वगासनस्थाम् । शखाब्जशूलसिधरां महेषीं राज्ञीं भजेऽहं तुहिनाद्रिरूपाम् ॥

—रक्तादेवी राज्ञी मन्त्र—

इस मन्त्र का एक हजार जप नवरात्रि में किया जाये फिर पंचमेवा और गुग्गल से हवन करके नौ कुवारी कन्याओं को भोजन करायें । इससे सब कार्यों का शुभाशुभ फल प्रत्यक्ष ज्ञात होता है ।

'ॐ रक्तकोमलधारिणी महामृतवासिनी जटो भवन्तु कत्थ्यै कथ शीघ्रं शुडुं कुरू नमः ।'

×

ज्वालामुखी मन्त्र

—ज्वालामुखी ध्यानम्—

ज्वालापरीतास्थसरोरूहां तां सरोज-
शंखासिगदाधरां च। सिंहासने स्थापितपाद-
युग्मां ज्वालामुखीं तां हृदये स्मरामि ॥

—ज्वालामुखी मन्त्र—

इस मन्त्र का नित्य केवल एक माला जप करने से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है।

'ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखी ममसर्व[illegible]
भक्षय भक्षय हुं फट् स्वाहा।'

त्रिपुर सुन्दरी मन्त्र

—त्रिपुर सुन्दरी गायत्री—

'ॐ ऐं त्रिपुरादेव्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि सौः तन्नो क्लीन्ने प्रचोदयात् ।'

(१) त्रिपुर सुन्दरी मन्त्र—

इस मन्त्र का सवा लक्ष जप करने से राजपक्ष के सब कार्यों में सिद्धि होती है ।

'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क्ली रुं क्रीं क्लीं सौः ऐं क्ली ह्रीं श्रीं ।'

(२) बाला त्रिपुर सुन्दरी मन्त्र—

'ॐ ऐं क्लीं सौं श्रीं बालात्रिपुरी सुन्दर्यैं नमः ।'

(३) त्रिपुर सुन्दरी मन्त्र (द्वितीय)—

'ॐ ऐं क्ली ह्रौं श्रीं त्रिपुरसुन्दर्यैंनमः'

इन उपर्युक्त दोनों में से किसी एक का भी २१ हजार जाप करने से राजकार्य सिद्ध होता है ।

×

अन्य महाशक्तियों के मन्त्र

१. रुक्मिणी मन्त्र—

विधि—यह मन्त्र भी लक्ष्मी मन्त्र का ही स्वरूप है इसका भी सवा लाख जप करने से लक्ष्मी प्राप्त होगी।

'ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मी ह्रीं सः स्वाहा,
ॐ ह्रीं रूक्मिणी ॐ श्रीं स्वाहा।'

२. मधुमती विद्यामन्त्र—

विधि—इस मन्त्र का रात्रि में सोने से पूर्व नित्य जप करते रहने से गुप्त धनाकर्षण में सिद्धि मिलती है।

'ॐ मधुमति दिशः स्थावरजंगम सागर-पुररत्नानि सर्वेषांकर्षिणी ठं ठं स्वाहा।'

३. पद्मावति विद्यामन्त्र—

विधि—इस मन्त्र का भी रात्रि सोते समय दो वर्ष तक निरन्तर जप करते रहने से सब गुप्त वार्ताओं और गुप्त धनादि का ज्ञान होने लगेगा।

'ॐ ह्रीं पद्मावतिदेवी त्रैलोक्यवार्ता कथय कथय स्वाहा।'

४. स्वप्नवती विद्या मन्त्र—

विधि—इस मन्त्र का सोते समय बिस्तर पर ही नित्य जप किया करें जब ये सिद्ध हो जायेगा तो स्वप्न से ही सिद्धि का भी पता लग जायेगा।

'ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं स्वप्नेश्वरी स्वप्ने कथय कथय ह्रीं स्वाहा।'

५. स्वप्नवती मन्त्र—

विधि—यह महान् चमत्कारी और पूर्णसिद्ध मन्त्र है। इस मन्त्र का नित्य एक माला जप बराबर चार वर्षों तक करें, स्वप्न में कार्य सिद्धि दीखती है।

'ॐ ह्रीं स्वपुरावाहितकालि स्वप्ने कथयामुकस्यामुकं देहि क्रीं स्वाहा।'

६. श्रुतदेवी मन्त्र—

विधि—इस मन्त्र की नवरात्रि में नौ माला प्रतिदिन जपें आपको क्या सिद्धि मिली स्वयं सुनाई देता है।

'ॐ नमो भगवति श्रुतदेवी हंसवाहिनी त्रिकालनिमित्तप्रकाशिनी सर्वकार्यप्रकाशिनी सत् भावे सत् भाषे असत् का प्रहार करे ॐ नमो श्रुत देवी स्वाहा।'

७. रत्नेश्वरी मन्त्र—

विधि—इस मन्त्र का सवा लाख जप करने से रत्नों में वृद्धि होती है।

'ॐ श्रीं ह्रीं ग्लूं स्नूं श्रीं ह्रीं ग्लूं स्नूं ह्रीं।'

८. हेमवतीश्वरी मन्त्र—

विधि—अत्यधिक आभूषण प्राप्त करने की इच्छा से स्त्रियाँ जप करें तो आभूषणों में वृद्धि होती है।

'ॐ ह्रीं श्रीं हैमवतीश्वरी ह्रीं स्वाहा।'

९. भवानी मन्त्र—

विधि—नित्य एक हजार जप करने से राजपक्ष के कार्यों में सफलता मिलती है।

'ॐ श्रीं श्रीं ॐ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं हुं फट् स्वाहा।'

१०. शक्ति मन्त्र—

विधि—कार्य में सफलता के बाद शत्रु नष्ट हो जाते हैं। सवा लाख जप का विधान है।

'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चामुण्डादैव्ये नमः।'

११. भुवनेश्वरी मन्त्र—

विधि—इस मन्त्र से जमीन-जायदाद-भवन सम्बन्धी दुःख दूर होते हैं। सवा लाख जप करें।

'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै नमः।'

१२. प्रसन्न पारिजाता मन्त्र—

विधि—इस मंत्र की एक माला नित्य जपने से घर में प्रसन्नता और सुख वृद्धि होती है।

'ॐ श्रीं ह्रीं नमो भगवति माहेश्वरी प्रसन्नवरदे अन्नपूर्णे स्वाहा।'

१३. शांभरी मंत्र—

विधि—सवा लाख जप करने से शत्रु नष्ट होते हैं।

'ॐ प्रीं देवि शाम्भरि क्रीं ठः स्वाहा।'

१४. गंगा मंत्र—

विधि—इस मंत्र के एक हजार जपने से श्री गंगादेवी प्रसन्न होकर सब पापों का नाश करती हैं।

'ॐ ह्लिलि ह्लिलि मिलि मिलि गंगा देवि नमः।'

१५. मणिकर्णिका मन्त्र—

विधि—इस मंत्र के नित्य जपने से मोक्ष प्राप्ति होती है।

'ॐ मं मणिकर्णिके प्रणवात्मिके नमः।'

१६. शीतला मंत्र—

विधि—बच्चों को शीतला माता निकलने पर नौ दिनों तक जप करें, आरोग्य हो जायेगा।

'ॐ ह्रीं श्रीं शीतलायै नमः।'

१७. सुमुखीदेवी मन्त्र—

विधि—इस मंत्र का नित्य एक हजार जपकर शहद और दूध से हवन करने पर वशीकरण, शहद, घी और पान से हवन करने पर आकर्षण तथा घी और विल्वपत्रों से हवन करने पर सर्वकार्य सिद्धि होती है।

'ॐ उच्छिष्टचाडांलिनी सुमुखिदेवि महापिशाचिनि ह्रीं ठः ठः ठः।'

१८. गोपाल सुन्दरी मन्त्र—

'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कृष्णाय गोविंदाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा।'

१६. रुक्मिणी वल्लभ मन्त्र—

'ॐ नमो भगवते रुक्मिणी वल्लभाय स्वाहा।

×

अन्य उपयोगी मन्त्र

१. वेदव्यास मन्त्र—

विधि—इस मंत्र का एक हजार जप करने से पुराणादि कथा सम्बन्धी कार्यों में सफलता और वाचन शक्ति प्राप्त होती है।

'ॐ व्यां वेदव्यासाय नमः।'

२. आकर्षण मन्त्र—

विधि—इस मंत्र का एक हजार जप करने से वस्तु और मनुष्य का आकर्षण हो जाता है। जब तक सिद्ध न हो तब तक जपा जाये।

'ॐ झां झां झां हां हां हाँ हें हें स्वाहा।'

३. कालाग्निरुद्र मन्त्र—

विधि—नित्य प्रति जप करने से आयु वृद्धि होती है। स्वास्थ्य लाभ मिलता है। भगवान रुद्र शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर जप कर्ता की रक्षा करते हैं।

'ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं ह्यौं सौं क्रौं क्रीं क्रौं क्लीं क्रौं क्रीं क्रीं क्रीं ॐ भूर्भुव स्वः श्री कालाग्निरुद्राय नमः।'

४. जय प्राप्ति मन्त्र—

विधि—पहले इस मन्त्र को नवरात्रों में एक लाख जप करके सिद्ध करें फिर १०८ बार जपकर जहाँ भी जिस कार्य के लिए जायें विजय प्राप्ति होगी।

"ॐ हुं फट्।"

५. राजवशीकरण मन्त्र—

विधि—इस मन्त्र का ११ हजार जप करने के बाद रोली गोरोचन कपूर और लाल चन्दन मिश्रित तिलक करें। फिर एक माला जपकर राजसभा में जायें तो कार्य सिद्धि मिलती है।

"ॐ ह्रीं सः भो राजवशंकरि अमुकं मैं वशं कुरू कुरु ह्रीं स्वाहा।"

६. खेचरी मन्त्र—

विधि—इस मंत्र के ६ लाख जप से वाक सिद्धि होती है।

"ॐ क्लीं खेचर्यै नमः।"

७. प्रवेश सिद्धि मन्त्र—

विधि—किसी नये नगर में या देश में प्रवेश करें तो इस मन्त्र को २१ बार पढ़कर सामने पड़े

कंकर को पेड़ की तरफ फेंक दें। फिर नगर में प्रवेश करें सिद्धि और सम्मान दोनों प्राप्त होंगे।

"ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणी अमृतस्रावे स्रावे सम्मानं सम्मानं लाभं देहि देहि स्वाहा।"

८. कुबेर मन्त्र—

विधि—यह मन्त्र शिवालय में बैठकर एक लाख जपने पर सिद्धि देता है।

"ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धन धान्य समृद्धि मे देहि दापय स्वाहा।"

९. दरिद्रता नाशक कुबेर मन्त्र—

विधि—इस मन्त्र के सवा लाख जपने से दारिद्र दूर हो जाता है।

"ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं विनेश्वराय नमः।"

१०. निधिदर्शक मन्त्र—

विधि—किसी शुभ दिन उपवास करें। शिवजी का पूजनकर सायंकाल इस मन्त्र का एक हजार जप करें।

"ॐ नमो रूद्राय रूद्ररूपाय नमो
बहुरूपाय नमो विश्वरूपाय नमो

विश्वात्मने नमः एकाय नमः एक रौरवाय नमः एकयक्षाय नमः एक क्षणाय नमो यक्षाय नमो वरदाय नमः तुद तुद स्वाहा ।"

११. अदृष्टकरण मन्त्र—

विधि—कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की रात्रि में श्मशान में अथवा शिवालय में दस हजार जप करें ।

"ॐ नमो निशाचर महामहेश्वर ममपर्यं-टतः सर्वलोकलोचनानि बंध बंध देव्या शाप-यति स्वाहा ।"

१२. यक्षसिद्धि मन्त्र (प्रथम)—

"ॐ नमो भगवते रूद्राय तुल तुल महे-श्वर महेश्वर नुज्वल नुज्वल विज्वल विज्वल मिज्वल मिज्वल हर हर यक्षरक्ष पूजिते यक्ष कुमारी सुलोचने स्वाहा ।"

१३. यक्षसिद्धि मन्त्र (द्वितीय)—

"ॐ नमो भगवते रूद्राय ॐ नन्न-नन्न महेन्न-विहेन्न, महेन्न-विहेन्न, हर हर रक्ष रक्ष पूजिते यक्षकुमारी सुलोचने स्वाहा ।"

(इन दोनों मन्त्रों में से किसी का भी सूर्योदय और

सूर्यास्त के समय नित्य एक हजार जप करें एक लाख होने पर सिद्धि मिलेगी ।)

१४. भूमिद्रव्य दर्शक अंजन मन्त्र—

विधि—शरद् ऋतु में वीर बहुटी लेकर उसमें सिंदूर पूरित् करें। आक की रूई बत्ती बनायें और काले तिलों का तेल लेकर उत्तरायण सूर्य में काजल बनायें। निम्नलिखित मन्त्र पढ़ते हुए उसे घोटें—

"ॐ ऐं मन्त्र सर्वसिद्धिभ्यो नमो विश्वेभ्यः स्वाहा ।"

इस प्रकार से तैयार किये गये काजल को निम्न-लिखित मंत्र से अभिमन्त्रित करें—

"ॐ कालि कालि महाकालि रक्षेद-अञ्जनम् नमो विश्वेभ्य स्वाहा ।"

तदुपरान्त स्वर्णश्लाका से अंजन को लगायें। लगाते समय निम्नलिखित मन्त्र जपें—

"ॐ सर्वसर्वहिते क्लीं सर्वे सर्वहिते सर्वौषधिप्रवाहिते विरते नमो नमः स्वाहा ।"

अंजन लगाने के बाद दूध और चावल का भोजन करें और शिखा बांधकर आँखों पर सफेद पट्टी बांधें। भूमि में छिपाया हुआ या दबाया हुआ द्रव्य दिखाई देगा।

१५. कार्यसिद्धि ज्ञापक मन्त्र—

विधि—रात्रि में सोने से पूर्व एक सौ आठ चावल के दाने लेकर इस मन्त्र से एक-एक चावल अभिमन्त्रित कर लें। फिर उन चावलों को पुड़िया में बांध सिरहाने रखकर सोयें। स्वप्न में दृश्य नजर आयेगा जिससे कार्य के करने या न करने का फल ज्ञात हो जाता है।

"ॐ नमो भैरवी ॐ महासरस्वती ॐ महामातंगिनी ॐ महात्रिपुर सुन्दरी मम कस्यापि स्वप्नं दर्शय स्वाहा।"

१६. गुप्तधन दृष्टि मन्त्र—

विधि—इस मन्त्र का सवा लक्ष जप करके मालती के फूल से घृत द्वारा हवन करें तो गुप्तधन दिखाई पड़ता है।

"ॐ नमो हंसिनी हंसगते माँ स्वाहा।"

१७. मदनायक्षिणी मन्त्र—

विधि—इस मन्त्र का एक लाख जप करके मालती के पुष्प, दूध और घी से हवन करे तो सर्व कार्यसिद्धि प्राप्त होती है।

"ॐ ऐं मदने मदनविद्रावणे अनंगसंगम देहि देहि क्रीं क्रीं स्वाहा।"

१८. पद्मिनी साधना मन्त्र—

विधि—इस मन्त्र का नित्य आधी रात में एक हजार जप करें और एक मास तक पृथ्वी पर एक हस्त प्रमाण का सुन्दर मंडल बनाकर सुगंध और द्रव्यादि से पूजन करें; गुग्गुल से हवन करें तो मन्त्र सिद्ध होता है।

"ॐ ह्लीं पद्मिनी स्वाहा।"

१९. शान्तिप्रद मन्त्र—

विधि—इस मन्त्र को नित्य त्रिकाल समय एक माला जपने से घर में शांति बनी रहती है।

"ॐ क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।"

२०. सुखप्रसव मन्त्र—

विधि—इस मन्त्र से जल को अभिमन्त्रित कर उसको स्त्री को पिला देने से सुख प्रसव होता है।

"ॐ ऐं भगवति भगमलिनी चल चल भ्रामय पुष्पं विकासय विकासय स्वाहा।"

२१. गोपाल मन्त्र—

विधि—इस मन्त्र का छः लाख जपकर हवन शांति करने से संतान का सुख और वशीकरण होता है।

"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय स्वाहा।"

२२. कृष्ण मन्त्र—

विधि—उक्त मंत्र वाली (गोपाल मंत्र के अनुसार)

"ॐ क्लीं कृष्णं क्लीं"

२३. पुत्रप्रदकृष्ण मन्त्र—

विधि—मन्त्र के सवा लक्ष जप के बाद नित्य एक हजार जप करने से सन्तान प्राप्ति का सिद्धयोग बनता है।

"ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।"

२४. वशीकरण मन्त्र—

विधि—मन्त्र को नवरात्रि में नित्यप्रति एक हजार जप करके सिद्ध कर लें अन्तिम दिन बिस्तर पर से उठने से पूर्व एक हजार जप करें तो वशीकरण हो जायेगा।

"ॐ नमः कन्दर्पशरविजालिनी मालिनी सर्वलोकवशंकरी स्वाहा।"

२५. सर्वोत्कृष्ट गायत्री मन्त्र—

गायन करने वाले को संसार सागर से तार देती है, इसलिए इसका नाम गायत्री है।

"ॐ भूर्भुव स्वः तत्सवितुरवरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।"

अर्थ—ॐ—सर्व व्यापक, सबकी रक्षा करने वाली।

भूः—सत्य स्वरूप।

भुवः—चैतन्य स्वरूप।

स्वः—आनन्द स्वरूप।

तत्—उस अनंत परमात्मा।

सवितुः—सविता (ब्रह्मा+विष्णु+महेष) सबका पालन व संहार करने वाली।

देवस्य—देव के।

वरेण्यं—श्रेष्ठतम भजनीय।

भर्गः—शुद्ध चेतन ज्योति को।

धीमहि—चिंतन करते हैं।

यः—वह परमात्मा।

नः—हमारी।

धियः—बुद्धियों को।

प्रचोदयात्—धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष में प्रेरणा करे तथा संसार से हटा कर निष्काम कर्म व भक्ति योग द्वारा आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए शुद्ध-बुद्धि प्रदान करे।

(गायत्री वेद की माता है और पाप को नष्ट करने वाली है। गायत्री के अतिरिक्त भूलोक में और स्वर्गलोक में पवित्र करने वाला और कोई नहीं है।)

×

अन्य प्रसिद्ध मन्त्र

कुछ मन्त्र जो मैंने मन्त्र सिद्ध करने वाले महानुभावों से सीख रखे हैं, उनको यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ। इनको सिद्ध करने की विधि भी साथ-साथ लिखी जा रही है। लोक कल्याण की भावना से लोकोपकारी पुरुष इनको सिद्ध करके जनता का भला करेंगे।

१. भूत बाधा उतारने का मन्त्र—

"ॐ नमो आदेश गुरू का ॐ अपर के सविकट मेष स्वभपति प्रहलान खावे पाताल राखे पांच देवी जंघा राखे कालिका मस्तक राखे महादेवी जी कोई ये पिंड प्रणको वेधे तो देव दानो भूत प्रेत डाकिनी शाकिनी गंडमाला तिजोरी एक पहरू सांझ को सवेरे के लिए कराये को वाहि के पेड़ इसकी रक्षा नरसिंह जी करेंगे शब्द सांचा फुरो ईश्वरी मन्त्र वाचा।"

विधि—इस मन्त्र को सात बार पढ़के रोगी को झाड़ दे तो अच्छा हो जायेगा।

२. घाव भरने का मन्त्र—

"सार सार विजय सार सार बांधू सात बार फूटे अन्न न उपजे घाव सीर राखे श्री

गोरखनाथ शब्दसांचा पिंड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा ।"

विधि---मन्त्र पढ़े फिर घाव पर फूंक दे तो घाव भरेगा, पीड़ा न होगी । इस मन्त्र को अवश्य सिद्ध करें और समाज में सम्मान प्राप्त करें । ×

३. चौकी पीर मुहम्मद की—

"बिस्मिल्लाहहरि रहमान निर रहीम पाँय घूंघरा कोटि जंजीर जापर खेले मुहम्मद बीर सवा सेर का तोसा खाय सब मन की कामना सवा मन का तीर जिस पर खेलन आवे मुहम्मद वीर मार-मार करता आवे बांध बांध करता आवे डाकिनी की पीतर को बांधना जात का मसान बांध चौयाया मसान नरसिंह बांधन भूमया पालिया कालिया मसान बांध लिया मसान सूकिया मसान बांध बांध कुआँ बावड़ी तालाब और सोतें, पीते, खाते, पकाते को बांध लाओ, पकड़ लाओ, लाओ जल्द लाओ जल्द हजरत इमाम हुसेन की जांघ से निकालकर लाओ बीबी फातमा के दामन से खुलाकर लाओ नहीं तो माता का चूसा दूध है नहीं, लाओगे

तो सुलेमान की सख्त दुहाई है शब्द सांचा चलो मन्त्र ईश्वरी वाचा।"

विधि—इस मन्त्र को शुक्रवार (जुमेरात की शाम) से आरम्भ करे। आसन पर बैठ पाँच-पाँच बार पढ़ लोबान को धूनी देता जाये। नित्य १०८ बार ऐसा करे तो २१ दिन में सिद्ध हो जायेगा। रोगी पर २१ बार पढ़कर फूंक दो तो रोगी ठीक हो जायेगा। ×

४. हनुमान सिद्ध करने का मन्त्र—

"ऐ हनुमान की मूरत जल्द हाजिर बहक रामचन्द्र जी महाराजा।"

विधि—जमीन पर घेरा खींचकर, साफ वस्त्र पहनकर चौनाई मारकर बैठें। सिन्दूर का तिलक लगायें, इलायची, लौंग साथ रखें। जब मन्त्र सिद्ध हो जाये, जो कार्य कराना हो उसके निमित्त मन्त्र कहे, कार्य सिद्ध होगा। ४० दिन तक ५ सहस्र बार प्रतिदिन अर्द्धरात्रि के बाद पढ़ने से सिद्ध होता है।×

५. हमजाद सिद्ध करने का मन्त्र—

"आगम निगम की खबर लगावे सोऽहं पारब्रह्म को नमस्कार।"

विधि—४० दिन तक दो सौ पचास बार नित्य जाप करें तो सिद्धि हाथ लगेगी। एक स्थान पर बैठे हजारों कोस दूर का हाल इस मन्त्र से पता लगता है।

६. मारण मन्त्र—

"ॐ नमः कालरूपाय शत्रु भस्मी कुरू कुरू स्वाहा।"

विधि—इसे एक लाख बार जपकर सिद्ध करे फिर काम में लायें। ×

७. मारण मन्त्र (द्वितीय)—

"दरदरी सुपारी नागर पान कत्था चूना लौंग मसान लाग लाग तू ऐसा लाग दिन नहीं चैन रात नहीं काल है। आसमान से तारा टूटे (अमुक) पर छूटे।"

विधि—इसे भी एक लक्ष बार जप करके सिद्ध करें। यह मन्त्र शब्द-शब्द सच्चा है। ×

८. चोरी ढूंढने का मन्त्र—

"ॐ नमो, सत्तर सौ पीर, चौंसठ सौ योगिनी, बावन सौ बहत्तर भैरव, तेरह सौ तन्त्र, चौदह सौ मन्त्र, अठारह सौ पर्वत, नौ सौ नदी, निन्यानवें सौ नाला, हनुमान यति गोरख रखवाला, कांसे की कटोरी अंगुल साठ चौड़ी कहो बीर कहां ते चलाई गिरनार पर्वत से चलाई अठारहभार वनस्पति चले

सोना चमारी को वाचा फुरो कानो कुम्हारी चाक ज्यों फिरे कहाँ कहाँ जाय चोर के जाय चांडाल के जाय चोर चांडाल को ले आये गड़ो धन बताय चाल चालरे हनुमत बीर जहाँ चले तहाँ रहे न चले तो गंगा यमुना उलटी बहे।"

विधि—प्रतिदिन १०८ बार पढ़ें तो १०१ दिन में सिद्ध होगा। कांसे की कटोरी का दीपावली की रात्रि को पूजन कर चौक में स्थापन कर मन्त्र पढ़ें तो कटोरी चले। जहाँ चोरी का माल गड़ा होगा कटोरी वहाँ चली जायेगी। x

९. प्रेत वशीकरण मन्त्र—

"ॐ श्रीं वं वं भुं भूतेश्वर मम कुरू कुरू स्वाहा।"

विधि—मूल नक्षत्र में बबूल के नीचे तीन दिन तक इस मन्त्र को प्रतिदिन १०८ बार जपे तो प्रेत प्रकट होकर 'मांग-मांग' कहेगा। तब वचन लेकर मन में जो विचार हो वह माँग ले। x

१०. भैरव की चौकी (भैरव का मन्त्र)—

"चेत सूना सान औधी खोपड़ी मरघटिया मसान बांध दे बाबा भैरों की आन।"

विधि—इस चौकी को पढ़कर घेरा खींच ले तो किसी प्रकार का भय नहीं रहेगा, दूसरा आदमी अपने मन्त्र से कुछ नहीं कर सकेगा। जब तक सिद्ध न हो प्रतिदिन जप करता जाये। सिद्ध होने पर प्रयोग करते समय चौकी को पढ़कर घेरा खींचे और प्रयोग करे। ×

११. शत्रु मर्दन मन्त्र—

"ॐ नमो आदेश गुरू बैरी बांधूं जोग फैले वाके घर में रोग कभी न आवे आगे तेरे गुरु के मंत्र फिरेंगे रक्त बिंदु की बांधू धारा अम्बर बांधूं बांधूं तारा मेरी शक्ति गुरु की भक्ति फुरे मंत्र साचा पिंड काचा ईश्वरी बाधा हन हन फट् स्वाहा।"

विधि—इस मन्त्र को शनिवार के दिन से आरम्भ करना चाहिए और २१ दिन तक प्रतिदिन १०८ बार जप करे। प्रतिदिन हनुमान का पूजन करे, लड्डुओं का भोग लगाकर बच्चों को बांटे। इस प्रकार करने से शत्रु स्वयं ही तंग आकर झुकेगा। यह अनुभव सिद्ध मन्त्र है।

१२. त्रिजुगी बन्ध—

"धूर धूर धूरिया धूर छोड़ पाताल बन्दे

अष्टकुण्डी की दौड़ बन्दे गौरा ब्रह्मा बन्दन कहौं मैं बन्दा धूरो बन्ध तीन जुग रहे ।"

विधि—इस मन्त्र को २१ दिन में हवन सामग्री लगा लौंग से सिद्ध करले । लौंग के जोड़े पर मन्त्र पढ़कर अग्नि पर चढ़ाता जाये तो सिद्ध होगा । धूल लेकर सात बार मन्त्र पढ़कर बंध लगादे तो तीन जन्म तक बंध लगा रहेगा । ×

१३. वशीकरण सुपारी मन्त्र—

"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय त्रिलोचनाय त्रिपुरवाहनाय (अमुकं) मम् वश्यं कुरु कुरू स्वाहा ।"

विधि—सुपारी हाथ में लेकर मन्त्र को १०८ बार पढ़कर जिसे सुपारी दे देवे अवश्य वश में हो जायेगा । ×

१४. धन बढ़ाने का मन्त्र—

"ॐ नमो भगवती पद्म पद्मावी ॐ ह्रौं ॐ ॐ पूर्वाय दक्षिणाय उत्तराय पश्चिमाय सर्व जन वश्य कुरू कुरू स्वाहा ।"

विधि—प्रातः समय चारपाई से उतरने से पहले इस मन्त्र को १०८ बार पढ़कर चारों दिशाओं में दस-दस बार फूंके । सभी दिशाओं से व्यापार मिलेगा । ×

१५. विदेशी को बुलाने का मन्त्र—

"ॐ ग्लां ग्लीं ग्लूं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं हः हः।"

विधि—पीपल के नीचे काले मृग चर्मासन पर बैठकर रूद्रवंती और श्रीफल की खीर बनाकर मन्त्र पढ़कर आहुति दे तो विदेश गया व्यक्ति शीघ्र घर आये। ×

१६. तलवार की धार बांधने का मन्त्र—

"ॐ नमो धार अधर धार बाधूं सात बार कटे न रोम न भीजे चीर खड़े की धार लेकर हनुमान शब्द साचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।"

विधि—रास्ते की धूल पर मन्त्र पढ़कर तलवार की धार पर मारे तो धार समाप्त होगी। ×

१७. वेश्या वशीकरण मन्त्र—

"ॐ सकल कामिनी आठा आठा शूल मकाला पाजल अन्चाल ॐ यः यः यः।"

विधि—विल्व के वृक्ष के नीचे काले मृग चर्म पर बैठकर श्वेत पुष्पों व विल्वपत्रों को मन्त्र पढ़कर अग्नि में आहुति करे। जिस वेश्या का मन में ध्यान करे वही वश में हो। ×

१८. द्यूत (जुआ) बशीकरण मन्त्र—

"केखै रक्तै दभेरू पाक जिन नेदनी चतः छः दाणीय मैत्रे तेव हिष्ठिवा लोक्षिण पात्रम् ।"

विधि—यह मन्त्र दाहिनी भुजा पर बांधकर जुआ खेले तो सबको जीत ले ।

×

१९. महा मोहन मन्त्र—

"ॐ भ्रां धुं धुं ठः ठः ।"

विधि—चिचिका पक्षी का पंख लाकर कस्तूरी में पीसकर मन्त्र पढ़कर तिलक करे । जो देखेगा मोहित हो जायेगा ।

×

२०. शरीर रक्षा का मन्त्र—

"ॐ नमो आदेश गुरू को वज्र वज्री वज्र किवाड़ वज्री मैं बांधा दशौ द्वार को घाले उलट वेद बाही को खात, पहली चौकी गणपति की दूजी चौकी हनुमत की तीजी चौकी भैरों की चौथी राम रक्षा करने को श्री नरसिंह देव जी आये शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा सत्यमान आदेश गुरू का ।"

विधि—इस मन्त्र को शनिवार से आरम्भ करे और बीस दिन तक प्रतिदिन १०८ बार पढ़कर जाप करे। जब सिद्ध हो जाये तब कहीं जाने से पहले १०८ बार जपकर अपने अंग पर भभूत लगाले तो सब प्रकार से शरीर की रक्षा होगी। ×

२१. मकूक काली का मन्त्र—

"काली महाकाली काली दोनों हाथ बजावे ताली हाथ में गदा हाथ में त्रिशूल गुण की बांधी नाव वाचा को बांधो बरमा-रक्ष वाचा को प्रणाम करो लाज राखने वाली काली।"

विधि—यह सिद्धि नवमी के दिन करनी चाहिए। १ लाख बार जपने से तीन दिन में सिद्ध हो जाती है। तीसरा दिन नवमी रहे। ×

२२. नजर बन्द का बंध—

"ॐ नमो काला भैरों घघरा वाला हाथ खंग फूलों की माला चौंसठ सौ योगिनी संग में चोला देखो खोल नजर का ताला राजा प्रजा ध्यावे तोहि सबको दृष्टि बांध दे मोहि मैं पूजहूँ तुमको नित ध्यावे राजा प्रजा मेरे पांय लगाये भरी अथाई सुमिरौं तोहि तेरा

किया सब कुछ होय देखूं भैरों तेरे मंत्र की शक्ति चले ईश्वरी वाचा।"

विधि—शुक्रवार के दिन एक चुटकी राख मसान से लावें, दो बार मन्त्र जपें। भैरों का विधि से पूजन करें। सिद्ध होने पर भरी सभा में चुटकी फूंक दें तो नजर बन्द हो। कार्य करे तो इधर-उधर देखें नहीं, काम बड़ी ही चतुराई का है। ×

२३. जिन्न भगाने का मन्त्र—

"मां बादशाह सब बादशाहों के सफेद घोड़ा सफेद पाखर जिस पर चढ़े जिन्नों के बादशाह बारह कोस अगाड़ी बारह कोस पिछाड़ी जो कुछ काम कहूँ बजा लावे मेरी भक्ति गुरू की शक्ति करो मंत्र ईश्वरी वाचा।"

२४. कमाल साहब का मन्त्र—

"सवा मन का भाकना लोहे की जंजीर हाथों आवे झूमता कमाल खाँ असवार खड़े बोलो अर्ज करे गुर्ज पटके हौज हुई जाय अब की कहना मेरो करो, भंग का प्याला जाय पियो हिन्दू की बेटी राम कहे मुसलमान की

कलमा मुहम्मद नाम पढ़े सत्तर काम तेरे एक काम मेरा करके न बताये तो कसम है।"

२५. शोकापीर की चौकी—

"सौ चक्र की बावड़ी लाल मोतियन का हार पद्मनी पानी नौकरी लंका करे निहार लंका सी कोट समुद्र सी खाई चलो चौकी राजा रामचन्द्र की आई कौन वीर चले मस्तान वीर चले शोका वीर चले सवा हाथ जमीन सोखत जल शीतल करे पवन को जोखन्त करे पानी को सोखन्त करे लोगों को सोखन्त करे पलीतन को भूत प्रेत का अपने बैरी को सोखन्त करे बताऊँ परमात्मा का चक्र चले वहाँ नौ मदन सोया करे नहीं तो माँ का चूसा दूध हरा करे शब्द सांचा चलो मंत्र ईश्वरी वाचा।"

२६. सर्वश्रेष्ठ मुहम्मद का मन्त्र—

"अन्तरकुशी सत्य खुदाय तिउँगा कटोरा लोहे के कोट वज्र का ताला अल्लाह नबी बैठे रखवाला हाथ की पांव की ज़रिया

धुरिया तेंतीस कोस की बलाय जात रहे वीर मुहम्मदा तेरी आन है।"

२७. खेलने पर बांधने का मन्त्र—

"बिसमिल्लाहिर्रहिमानिर्रहीम लाइल्ला-लिल्लाह मुहम्मदर्रहसूलिल्ला मुसलमानी अवादानी मरी न खाय परी न छोड़े वे मुसलमान वहिश्त को जाय हुआ ईद का रोज गसल कर सैयद नहाया बाजा बम्ब नगाड़ा बख्तर तोप मंगाय दिया प्याले सहायवा सब चल खाये चौकी चौकी पै चौकी चली अम्बर हुआ सेत सैयदों से रारि हुई तरवर तारा गढ़ के खेत खिगसा घोड़ा नहीं मीना सा मर्द वही जिसने सरवार तारा गढ़ तोरा अजय-पाल सा देव नहीं जिसने चक्कर चलाया मीरा पढ़ी नमाज वहाँ का वहीं ठहराया आतिल कुर्सी बन्द कुरात घाटे बाढ़े तुहि समान आकाश बांध पाताल बांध बांधे नदी तालाब देह बांध धड़ को भी बांधे कहा हुय जाय मरघटियामसान हहिया मसान जहि-हिया मसान भिरगिया मसान फलकिया

मसान कालका ब्रम्हराक्षस को चुडैल पृथ्वी को देवी देवताओं को बांध के बस में न करे तो सूअर काट सूअर की बोटी दाँत तर दबा-येगा सत्तर नाड़ी बहत्तर कोठा से बांध-बांध कर न लावेगा तो चमार के छीले और धोबी की नाद में पड़े चल तो सही मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फले मन्त्र ईश्वरी वाचा छू मन्त्र।"

विधि—यह मन्त्र मुसलमानी है। अतः इसे सिद्ध करना थोड़ा-सा कठिन है। इस मन्त्र को सिद्ध करने के लिए धूप दीप नैवेद्य फूल इत्र तथा अन्य सुगन्धित सामान साथ में लेकर जाय। आग साथ में लेकर अकेले जाना होगा। किसी मरघट पर दो बजे रात को जाके बाघम्बर पर बैठ के सिद्ध करना आरम्भ कर देना चाहिए इसी प्रकार २१ दिन प्रतिदिन करें। मन्त्र जाप २१ लाख बार करने पर सिद्ध होगा। ×

द्वितीय मन्त्र—"ईजली बिजुली बज किवार बज पहरे अपने अंग भरी मसान भूत शैतान उल्टी बिजुली मारे गजा की चोट औ मैं बचू गजा की ओट लीला घोड़ा जीन तोये बैठे मुहम्मदा बीर काला भैरों काली जटा भैरों

खले गदा चौपटा सवासेर का तोसा खाय अस्सी कोस बांधे जाय बैठ सभा में सुमरों तोय सबकी दृष्टि बांध दे मोहि कामरू देश कामक्षा देवी वहाँ बसे एक असमालय जोगी ने एक गारि लगात जहाँ लगे फूलों की वास फूल चुने लोना चमारी चलते को चलाय लाव बैठे को उठाय लाव सोते को जगाय लाव भूत को परेत को कालका ब्रम्ह राक्षस की पृथ्वी का देवी देवताओं को बांध-बांध कर लावेगा। तो चमार के छीले और धोबी की नाद में पड़े सत्तर नाड़ वहत्तर कोठी से बाँध-बाँध न लावे तो माता कामक्षा की जटा उखाड़ खून में स्नान करे चल तो सही मेरी भक्ति गुरू की शक्ति भले मंत्र ईश्वरी वाचा छू मंत्र।"

विधि—यह मन्त्र भी मुसलमानी है। यह मन्त्र, मन्त्र जानने वाले के लिए सिद्ध करना अनिवार्य है। क्योंकि मेल ककूल झमेल आदि चलाने वाले [illegible] इसी मन्त्र की सहायता से बचते रहते हैं। आपने लाखों पुस्तकें पढ़ी होंगी लेकिन इस पुस्तक के [illegible]

मन्त्र आपको देखने को नहीं मिले होंगे करने की तो बात ही दूर थी। इसको सिद्ध करने के लिए धूप दीप नैवेद्य इत्र फूल लौंग लोबान शराब आदि सामान लेकर शमसान में मरघट पर जाकर बाघम्बर आसन साथ में ले जाकर सिद्ध कर लें। जब मन्त्र चालीस दिन तक १ लाख बार प्रतिदिन जपा जाय तब देव आपके सामने आएगा उसी समय आप बात तय कर लेंगे वही जीवन पर्यन्त होता रहेगा। इस मन्त्र को बहुत सम्भल कर सिद्ध करना चाहिए। ×

२८. प्रत्येक मन्त्र को काटने वाला मन्त्र—

"तेली की खोपड़ी चाट चाटके मैदान ऊपर चढ़ा मुहम्मद सुल्तान, मुहम्मद सुल्तान किसका बेटा फातमा का बेटा सूअर खाय हलाल करें पै दे पांव वज्र की कील काट तो माता के दूध को हराम कह।"

विधि—यह मन्त्र एक रात में सिद्ध होने से सफलता मिलेगी।

×

नई पुस्तक—

कर्मकाण्ड भारती (ब्राह्मण पुस्तक)

नित्यकर्म विधि, माला के संस्कार की विधि, जप का नियम व साधन प्रक्रिया के भेद, यज्ञोपवीत बनाने और धारण करने के मन्त्र, शिखा बन्धन विधि, तिलक धारण विधि, भस्म धारण मन्त्र तथा विधि, माला पिरोने और धारण करने की विधि, सन्ध्योपासना विधि, गायत्री मूल एवं भाषा अर्थ, गायत्री पुरश्चरण, गायत्री जप के उपरान्त २४ मुद्राओं के चित्र, गायत्री कवच, गायत्री स्तोत्र, गायत्री सहस्रनाम, स्वस्ति-वाचन, गणेश पूजन, षोडषमातृका पूजन, नवग्रह पूजन, पंच-लोकपाल पूजन, दशदिक्पाल पूजन, दुर्गा पूजन, महालक्ष्मी पूजन, शिव पूजन, अंग पूजा, श्री सूक्त, लक्ष्मीसूक्त, आवरण पूजा तथा यन्त्र तथा मन्त्र महोदधि मत, वशिष्ठ मत, विश्वामित्र मत और अनेकों प्रकार की सामग्री कपड़ा जिल्द ग्रन्थ का मूल्य २५-०० रुपये। डाक खर्च अलग

मंगाने का पता :—

रणधीर बुक सेलस [प्रकाशन] हरिद्वार (उ०प्र०)

धार्मिक [illegible]

हिन्दुओं के व्रत और त्यौहार
भगवान श्री कृष्ण की अद्भुत [illegible] उपदेश
श्री विष्णु सहस्रनाम भाषा-[illegible]
जीवन श्री गुरु नानक देव
गुरु नानक उपदेश (जपुजी [illegible])
जीवन स्वामी रामतीर्थ
स्वामी विवेकानन्द चरित्र और [illegible]
अमरनाथ की अमर कहानी
भगवान शंकर के २१ अवतार और १२ ज्योतिर्लिंगों की कथा
मां गंगा (महिमा, प्राचीन इतिहास कथाएं इत्यादि)
रुद्राक्ष महात्म्य और धारण विधि
वृहद् पूजा भास्कर (तीनों भाग)
वैष्णो देवी दर्शन और नौ देवियों की कथा
श्री मद् देवीभागवत पुराण
श्रीमद् भगवद् गीता (भाषा-टीका)
सम्पूर्ण श्री शिव पुराण
श्री काली उपासना
श्री भैरव उपासना
वर्ष भर की गणेश चतुर्थी व्रत कथाएं
वर्ष भर के एकादशी महात्म्य
सचित्र अमर कथा (शिव पार्वती विवाह)
प्रजापति दक्ष की कथा
चाणक्य नीति भाषा-टीका
सचित्र भर्तृहरि शतक भाषा-[illegible]
लवकुश काण्ड भाषा-[illegible]
सुन्दर काण्ड मूल पाठ

आर. बी. एस. प्रकाशन हरिद्वार (२४९४०१)